Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गृहचर्या

में

नर-नारी सहयोग

भवानी शंकर

-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kos

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुस्तक-समीक्षा हेतु

श्री नन्द कुमार अवस्थी
सम्पादक "वाणी सरोवर'
को सादर एवं सस्नेह
भेंट

कृष्णा …
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
दयानंद (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय
उरई (जालौन)
उत्तर प्रदेश.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गृहचर्या में नर-नारी सहयोग

भवानीशंकर

सत्संग आश्रम
चन्द्रनगर, उरई (उ. प्र.)

मूल्य-२ रु०

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

● सर्वाधिकार सुरक्षित

● भाग—२
● प्रथम संस्करण, गुरु पूर्णिमा १९७२
● दूरभाष सं०—१३६

प्रकाशक—
प्रोफैसर कृष्णा जी
डी. बी. पोस्ट ग्रेज्यूएट कालेज
उरई

एक मात्र वितरक—
संत जी
बी. एस-सी.,
एल-एल. बी.

कृते:— :—
श्री राधा मातेश्वरी सेवा समिति (रजि०)
सत्संग आश्रम, ५१/२ चन्द्रनगर
उरई (उ० प्र०)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१–नित्यप्रति केवल १० मिनट देने से एक पाठ पूरा हो जाता है (इसमें कर्तव्य पालन और महिला सभ्यता व सदाचार एक ही पाठ में आ जाते हैं।) हर पाठ के ऊपर १ से ३० दिन तक लिखा गया है।

२–ईश्वर कृपा से आशा है कि जो नर--नारी निरन्तर १--१ पाठ प्रतिदिन करते रहेंगे उनके घर का वातावरण शुद्ध, पवित्र तथा शांतमय रहेगा।

३--घर २ में वैमनस्यता एवं आपसी कलह शनैः शनैः मिटकर आपस में प्रेम भाव बढ़ता जावेगा।

४--प्रत्येक दिन जो नर--नारी श्री भगवान की आराधना करते हैं, उनको अपने २ अभ्यास के समाप्त होते ही इस पुस्तक का पाठ बराबर करते रहना चाहिए। एक महीना के पूरे पाठ के बाद फिर से पहला पाठ शुरू करके अखीर महीना तक एक एक पाठ रोज करते रहना चाहिए। ऐसा कार्यक्रम निरन्तर

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जारी रखना है । प्रतिदिन की पूजा के साथ इस पुस्तक का एक पाठ पूजा का अंग बना लेना चाहिए ।

५--नित्यप्रति जो श्री भगवान की पूजा नहीं कर पाते हैं उनको इस पुस्तक का एक एक पाठ प्रातःकाल या सोने के समय तक यथाशक्ति निश्चित समय पर करने से जो लाभ होगा उसको वे स्वयं ही अनुभव करेंगे ।

६--घर में जितने भी पढ़े लिखे सदस्य हों सब को इसका पाठ लाभदायक होगा । जो व्यक्ति न पढ़े हों, उनको सुना देना चाहिये । बालक, बालिकायें, पुत्र वधुओं, माताओं, बहिनों, युवा, वृद्ध सभी के लिये यह पाठ सदाचार मार्ग की ओर आकृषित करने वाला है ।

७--घर के प्रत्येक प्रधान का कर्तव्य है कि घर में सभी को नित्यप्रति इस पुस्तक के पाठ करने को प्रेरणा देते रहें और समय २ पर यह भी देखते रहें कि इस पाठ करने से घर के वातावरण में कितना सुधार हो रहा है ।

भवानीशंकर

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

पहला पाठ (१)

१–जिस किसी ने अपने प्रति, चाहे थोड़ा ही उपकार किया हो, उससे कहीं अधिक उसके साथ उपकार करना धर्म है ।

२–यदि किसी कारणवश किसी की कोई वस्तु अपने हिस्से से अधिक आ गई हो, तो नम्रतापूर्वक शीघ्र से शीघ्र वापिस लौटा देना चाहिए ।

३–घर में यदि किसी से भूल चूक हो जावे, तो उसको एकांतमें बुलाकर प्रेमभाव से समझा देना चाहिये। घर के सदस्यों के सामने उसके दोष को बताकर लानत मलामत करने से कलह और लड़ाई-झगड़े की नौबत आ जाती है। गलती करने वाला भी बेशर्म होकर और अधिक गलतियां करने लगता है ।

४–अपने से पद, आयु, विद्या, नाता, और सम्मान में बड़े व्यक्तियों का नम्रतापूर्वक आदर करना चाहिये। इनका कभी भी अनादर न स्वयं ही करो और न दूसरों के द्वारा होने दो ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५--जिस किसी से मिलने का जो समय निश्चित किया गया हो, अपने आवश्यक कार्यों को भी छोड़कर उससे ठीक समय पर मिलने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि कारणवश ऐसा न हो सके, तो समय से पहले ही सूचना देते हुये क्षमा मांग लेना चाहिये।

६--चाहे किसी धार्मिक स्थान, बाजार, मेले इत्यादि में भीड़ में किसी का धक्का लग जाय या पानी वगैरह गिर जाय या अन्य कोई खराब काम हो जाय, तो तुरन्त ही क्षमा मांगकर उसे भावप्रेम के साथ शांत कर देना चाहिये।

७-दूसरे लोगों के एहसान को, अपने ऊपर कम लादो, किन्तु स्वयं अधिक से अधिक सेवा रूपमें उपकार कर देने पर भी उसके बदले की आशा नहीं करनी चाहिये।

८--जितने भी मज़हब, पंथ और सम्प्रदाय हैं, उनके अनुयायियों से यदि सम्पर्क हो, तो उनमें जो अच्छे गुण हों, वह ले लेना चाहिये।

९--महापुरुषों, विद्वानों, समाज और देश के शुभ-चिन्तकों का कभी भी निरादर मत करो। इन्हीं के पुण्य बल पर संसार चल रहा है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता व सदाचार

वैवाहिक सम्बंध को सुखी और स्थायी रखने का मूल मंत्र

१–शादी के समय जिन वेदमन्त्रों से संस्कार होता है वे सब हर एक वर-कन्या को अर्थ सहित कंठस्थ होने चाहिये। वर-वधू स्वयं ही बोलें। पंडितों द्वारा की गई प्रतिज्ञा का अर्थ न समझने के कारण वर--वधू पर कोई विशेष असर नहीं होता।

२–विवाह के वेदमन्त्र निम्नलिखित हैं—

तीर्थंव्रतोद्यापन यज्ञदानं मया सह त्वं यदि कान्त कुर्यात्।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी १

हव्यं प्रदानै रमरान्पितृश्चकव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथाः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं द्वितीयम् २

कुटुम्ब रक्षा भरणे यदित्वं कुर्यात्पशूनां परिपालनं च।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं तृतीयम् ३

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आयव्ययौ धान्यधनादिकानां पृष्ठानिवेशं च गृहे निदध्यात् ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं चतुर्थम् ४

देवालयाराम तडागकूप वापीर्विदध्या यदि पूजयेथाः ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं च पञ्चमम् ५

देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदा विदध्यात् क्रयविक्रयौ त्वम् ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं च षष्ठम् ६

न सेवनीया परपारकीया त्वया भवोद्भाविनी कामिनीति ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं च सप्तमम् ॥७

(कन्या वचन)

—तीर्थ-व्रत-उद्यापन-यज्ञ-दान इत्यादि कर्म मेरे सहित करो ॥१॥

—होम यज्ञादि को करके देवों को श्राद्ध तर्पण आदि में पितरों को पूजो ॥२॥

—कुटुम्ब की रक्षा और भरणपोषण करो तथा गौ महिषी आदि पशु रखो और उनका पालन करो ॥३॥

—धान्य और धन आदि का लाभ खर्च करो तथा यदि दूसरे के घर में रखो तो मुझे पूछकर ही ।४॥

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

—मन्दिर, तालाब, बगीचा, कुआँ, बावड़ी इत्यादि मेरी सम्मति से बनाओ तथा बना के प्रतिपालन करो ॥५॥

—परदेश में या अपने देशमें व्यापार करो अर्थात् कमाकर लाओ ॥६॥

तुम्हें अत्यन्त भावना तथा कामना होने पर भी पर-स्त्री का सेवन नहीं करना होगा ॥७॥

—यदि उपरोक्त सात प्रतिज्ञायें आपको मान्य हों तो मैं आपके वाम भाग में आऊँ ।

(वर उवाच)

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तंतेऽस्तु ।
मम वाच मेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा वि युनक्तु मह्यम् ।
मदीयचित्तानुगतं च चित्त सदा मदाज्ञा परिपालनं च ।
पतिव्रता धर्मपरायणा त्वं कुर्यात् सदा सर्वमिदं प्रयत्नम् ॥

(वर ने कन्या से कहा)

अपना हृदय मेरे काम में लगाओ, अपना चित्त मेरे चित्त के अनुरूप करो, तुम मेरे मनमें अपना मन मिलाकर मेरे वचन का पालन करो । प्रजापति तुम्हें मुझे प्रसन्न करने में प्रवृत्त करें । तुम पतिव्रता, धर्म-परायणा, मेरी आज्ञाकारिणी और अपनी प्रतिज्ञा के

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनुसार कार्य करने में तत्पर रहोगी तो मैं सब तुम्हारा कहा हुआ यत्नपूर्वक पालन करूंगा ।

३ विवाह के पश्चात् पति-पत्नी को वेदमन्त्रों का अर्थ समझकर प्रतिदिन पाठ अवश्य करते रहना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करते रहना चाहिये कि उनके अनुसार गृहचर्या में सफलता प्राप्त हो ।

४ कन्या को बनाने की पूरी जिम्मेदारी मां की होती है। यदि मां योग्य न हो, तो पिता का धर्म है कि वह कन्या को ऐसी शिक्षा देता रहे कि जब कन्या ससुराल वालों के वातावरण में पहुँचे तो उसी वातावरण में घुल मिल जाये ।

५ दान सतोगुणी और उत्तम होना चाहिये। कन्या को सब तरह से योग्य व शिक्षित तथा गृहकार्य में कुशल बनाकर जो दान किया जाता है, वह यथार्थ में कन्या-दान ही नहीं है किन्तु महान दान है।

६ जो विवाह गुण व सदाचार को न देखकर केवल मुख के रंग रूप तथा शारीरिक सौन्दर्य को देख कर किये जाते हैं, परिणाम में वे हानिकारक और कष्टमय ही होते हैं। सुन्दरता, गुणों की लाभकारी होती है। चमड़े की सुन्दरता सुन्दरता नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य पालन और सदाचार

पाठ (२)

१–संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है किंतु ईश्वर भक्ति के बिना सुख की प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को किसी धार्मिक ग्रंथ का पाठ, सत्संग तथा ईश्वर भक्ति के साधन नियमानुसार प्रतिदिन अवश्य करते रहना चाहिए।

२–सारा जीवन केवल धनोपार्जन और धनसंचय में ही लगा रहने से मनुष्य अपनी आत्मशक्ति को नष्ट करके आत्म हत्या करने वालों की गति को पाता है।

३–जब कोई किसी की निन्दा कर रहा हो तो उसे मत सुनो। वहां से चल देना ही उस समय सबसे अच्छा उपाय है। अगर निन्दा के शब्द कान में पड़ ही जावें तो उनका स्वाद न लेकर उसी समय तुरन्त ही दृढ़ता के साथ मन से कहो कि यह सत्य नहीं है और मन से ऐसा कहना उस समय तक जारी रक्खो जब तक कि वह शब्द तुम्हारे कान द्वारा निकल न जावे। अगर ऐसा प्रायश्चित न करोगे तो वह (निन्दा के शब्द) छूत की बीमारी की तरह तुम्हारे सारे शरीर में फैलकर असाध्य रोग पैदा कर देंगे।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-अवसर पाकर भी जो मनुष्य निर्धन रोगी अनाथ और दुःखी प्राणी की यथाशक्ति सहायता नहीं करता है वह उन्हीं की गति को पाता है।

५-अपने मन को कार्य रहित मत रक्खो किन्तु सदा अच्छे विचार मन के ऐसे भाग में रहने दो कि जब जब तुम्हारे मनको दूसरे कामों से अवकाश मिले तब तब वे आकर तुम्हारे सामने खड़े हो जावें।

६-प्रति दिन छोटे छोटे कामों में दूसरों की सहायता करते रहने का अभ्यास बढ़ाते रहना चाहिए ताकि जब कभी बड़े काम में सहायता करने का अवसर मिले तो वह हाथ से न जाने पावे।

७-मनसे दुःखों का चिन्तन न करना ही दुःख निवारण की अचूक दवा है।

८—प्रत्येक कार्य में नियम की पाबन्दी का उलंघन न होना एक बड़ा साधन है।

९—जिस तरह उपाय करने पर लकड़ी से अग्नि और दूध से घी निकलता है उसी तरह सत्संग तथा सन्तों की कृपा द्वारा अभ्यास व साधन से आत्मपद तथा ईश्वरभक्ति की प्राप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिला सभ्यता और सदाचार

पाठ (२)

१–जब तक पत्नी, पति के वास्तविक कल्याण का साधन नहीं करती और उसके सदाचार मार्ग में सहायक नहीं होती, तब तक वह पत्नी, पत्नी कहलाने के योग्य नहीं है।

२–जो मातायें निरन्तर अपने पति की रुचि को जानकर प्रेमभाव तथा नम्रतापूर्वक उनको सब प्रकार से सन्तुष्ट और प्रसन्न रखती हैं वे अपनी पवित्र सेवा द्वारा पति की आयु को बढ़ाती हैं।

३–जो महिलायें अपने पति की आज्ञा का उल्लंघन करके मनमाना बर्त्ताव करती हैं वे पति के लिये शत्रु से भी अधिक दुखदायिनी होती हैं।

४–प्रत्येक महिला का धर्म है कि दूसरी महिलाओं के आभूषण वस्त्र तथा अन्य किसी वस्तु को देखकर अपने पति से छिपाकर उन वस्तुओं को खर्च किये अथवा बिना खर्च किये किसी भी पुरुष या स्त्री से किसी भी दशा में न लेवे (चाहे वह पुरुष और स्त्री अपना निकट से निकट ही सम्बन्धी क्यों न हो) पति से किसी बात का छिपाना महा पाप है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–महिलाओं का धर्म है कि वे सदा अपने पति की रुचि और आज्ञा के अनुसार प्रत्येक कार्य करें । जो महिलायें अपने पति की रुचि के विरुद्ध कोई काम करती हैं वे पति की आयु को उसी प्रकार कुतरती हैं जैसे चूहा समय पाकर रस्सी को ।

६–प्रत्येक गृह-लक्ष्मी का धर्म है कि भोजन बनाने और परोसने का काम नौकरों पर न छोड़कर अपने ही अधिकार में रक्खे ।

७–वे गृह-लक्ष्मी बड़-भागिनी हैं जिनको अपनी परम पूज्य सास की सेवा करने का अवसर प्राप्त है उनका धर्म है कि अपनी सास की आज्ञानुसार भोजन अवश्य बनावें, परन्तु प्रेम और नम्रता पूर्वक ऐसी साधना रक्खें कि बना हुआ भोजन उनकी परम पूज्य सास अपने पुत्रों को अपने ही हाथ से परोसें या उनके भोजन करते समय वे मौजूद रहें ।

८–वे मातायें धन्य और जगत पूज्य हैं जो स्वयं नियमानुसार नित्यप्रति प्रातः, मध्यान्ह व सायंकाल ईश्वर उपासना करती हैं और अपनी मातृ–दृष्टि तथा सदाचार द्वारा अपने पुत्र-पुत्रियों, पुत्र-वधुओं एवं घर के अन्य सम्बन्धियों से ऐसी ही साधना कराती हैं ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य पालन और सदाचार

तीसरा पाठ (३)

१–जिसने मनुष्य शरीर पाकर भी ईश्वरभक्ति का प्रयत्न नहीं किया तो मानो उसने अपने आप ही को नाश कर लिया।

२–सत्संग किये बिना केवल ग्रन्थ अवलोकन द्वारा अभ्यास करने से सब साधन व्यर्थ हो जाते हैं इसलिए ज्ञान और भक्ति प्राप्त करने के लिए अनुभवी महात्माओं के पास सत्संग अवश्य करना चाहिये।

३–जैसे जैसे मनुष्य के पास धन बढ़ता जाता है वैसे वैसे ही उसके सद्गुण नष्ट होते जाते हैं और वह दयाशून्य होकर निर्धन, कातर व दुःखी आत्माओं से सीधी बात नहीं करता, उसको उनके दुःख नेत्रों से दिखाई नहीं पड़ते, उनकी हीन-दीन पुकार उसको सुन नहीं पड़ती।

४–लोभी किसी के साथ नेकी नहीं कर सकता है। वह दूसरों के साथ इतना निर्दयी नहीं होता जितना कि स्वयं अपने साथ।

५–शारीरिक, मानसिक और दैनिक आपत्तियों को सहन करने की शक्ति बिना ईश्वर-भक्ति प्राप्ति किये कदापि सम्भव नहीं।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६–प्रत्येक साधक को आत्मोन्नति तथा ईश्वर-भक्ति के साधन का रोजाना का हिसाब उसी तरह रखना चाहिये जिस तरह नित्यप्रति सरकारी खजाने की आमदनी व खर्च का हिसाब खजान्ची रखता है।

७–स्वार्थ त्याग में एक बहुत बड़ी वीरता की आवश्यकता है, जो कि बिना आत्मबल के कदापि सम्भव नहीं। इसलिए श्री भगवान की उपासना का साधन प्रत्येक दिन समय पर अवश्य करते रहना चाहिये।

८–रुपया पैसा सच्चा धन नहीं है और न उससे कल्याण होता है। केवल धन पर भरोसा करना चिकनी भूमि पर खड़ा होना है।

९–अपने ही स्वार्थ में अपना सारा समय लगाना दुर्बलता है और मृत्यु का आवाहन करना है।

१०–निस्वार्थ सेवा करने से आन्तरिक शक्ति की वृद्धि होती है और ईश्वरी मार्ग में विशेष सहायता मिलती है तथा गृहचर्या में शांतिमय जीवन व्यतीत होता है।

११–जिसके हृदय से जितना ही अधिक स्वार्थ निकल जायेगा उतना ही वह नम्र होता जावेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिला सभ्यता और सदाचार

तीसरा पाठ (३)

१–अपनी संतान को सदाचारी बनाने के लिये माताओं को उच्चस्वर से कभी न बोलना चाहिये और अपनी कन्याओं तथा पुत्र बधुओं को मन्दस्वर से शांति-पूर्वक बोलने का साधन कराते रहना चाहिये।

२–स्त्रियों को ऐसे महीन वस्त्र पहिनना तथा ओढ़ना न चाहिये जिससे उनके गहने तथा शरीर के अंग दिखलाई देवें।

३–जिस तरह स्त्रियां घर के मनुष्यों के सामने लज्जा के साथ घूंघट निकालती तथा पर्दा करती हैं उसी तरह उनको बाहिरी मनुष्यों के साथ भी व्यवहार करना चाहिये।

४–दूसरों के घर जाने पर स्वतन्त्रता पूर्वक निर्भयता से स्त्रियों के साथ जोर-जोर से हंस-हंस के बात करना तथा दूसरों की बुराई करना असभ्यता है।

५--बहुत सी स्त्रियों का मन घर में नहीं लगता, थोड़ा सा अवकाश पाते ही दूसरों के घर बिना बुलाये चक्कर लगाया करती हैं। ऐसा करने से वे अपनी मर्यादा को नष्ट करती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६--घर गृहस्थी के कामों से अवकाश पाने पर स्त्रियों को चाहिये कि वे अपना समय स्वाध्याय में तथा अपने आध्यात्मिक अभ्यास की कमी को पूरा करने में बितावें। इसके पश्चात् छोटे बच्चों तथा पड़ोस के बालक-बालिकाओं को पढ़ाने लिखाने में एवं उनको अच्छी अच्छी बातों के सिखाने में अपना समय व्यतीत करें।

७--अपने घर के द्वार पर स्त्रियों का बैठना या खड़े होना निन्दनीय है। ऐसी स्त्रियां सदाचारहीन कही जाती हैं।

८--स्त्रियों को चाहिये कि अपने धर्म की रक्षा का स्वयं ही विशेष ध्यान रक्खें और पुरुषों के साथ व्यर्थ ही अनावश्यक बातचीत न करें। आवश्यकता पड़ने पर मर्यादा के साथ नीची दृष्टि करके मन्दस्वर से शांति-पूर्वक आवश्यकता से अधिक बातचीत न करें।

९--प्रत्येक महिला का धर्म है कि अपने मनमंदिर (हृदय) को अपने आध्यात्मिक अभ्यास द्वारा उसी भांति साफ-सुथरा रक्खें जिस भांति झाड़ू से साफ कर व लीप-पोतकर घर को साफ रखती हैं और साबुन व तेल इत्यादि मलकर स्नान करके शरीर को स्वच्छ व पवित्र रखती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य पालन और सदाचार

चौथा पाठ (४)

१-जिनके घर में लड़ाई झगड़ा होते हैं उस घर के मनुष्य कदापि सभ्य नहीं कहे जा सकते हैं। इसलिये घरेलू कलह तथा झगड़े से बचने के लिये घर के प्रधान पुरुष तथा स्त्री का कर्तव्य है वे नित्यप्रति नियमानुसार प्रार्थना करते रहें कि हे ईश्वर! घर के सब प्राणियों को सुमति और सुबुद्धि दे।

२-चलते समय अपनी दृष्टि नीची रखना चाहिये और यथासम्भव उसे अपने लक्ष्य पर रखने का अभ्यास करते रहना चाहिये। इधर-उधर चंचल दृष्टि रखकर चलना असभ्यता का लक्षण है।

३-बैठते समय हमेशा सीधे बैठने का अभ्यास रखना चाहिये। गर्दन नीची न हो और कमर झुकी न हो।

४-यदि कहीं स्त्रियां बैठी हों तो पुरुष को वहां चुपचाप नहीं जाना चाहिये यदि वहां जाना आवश्यकीय हो तो कोई ऐसा शब्द कहकर आगे बढ़े कि उन्हें पुरुष के आने की आहट मिल जावे।

५-जहां औरतें रहती हों उस जगह व्यर्थ ही ठहरना, घूमना, फिरना और बार-बार आना-जाना असभ्यता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

चौथा पाठ (४)

१–जिस प्रेम और भाव से महिलायें अपने माता-पिता तथा भाई-बहिनों को चाहती हैं उसी प्रेम भाव से जब वे अपने पति के माता-पिता एवं भाई-बहिनों को चाहने लगेंगी तभी वे अपने पति की अर्द्धांगिनी कहलाने की अधिकारी हो सकती हैं। नित्य प्रति श्री भगवान् की उपासना करने से यह गुण प्राप्त हो सकता है। इसलिये प्रत्येक महिला का धर्म है कि गृहस्थी के अन्य आवश्यक कार्यों से भी अधिक श्री भगवान् की उपासना को आवश्यकीय समझकर नित्य प्रति नियमानुसार निश्चित समय पर अपने धर्मानुसार श्री भगवान् की उपासना अवश्य करती रहें।

२–महिलाओं का धर्म है कि किसी दूसरेके घर जाकर अपना बड़प्पन दिखाने के लिये मनमाना व्यवहार न करें किन्तु जिसके घर जावें उसकी सुविधाओं का और उसके हुये नियमों का अच्छी तरह ध्यान देकर पाबन्दी करें।

३–जो हृदयसे शुभचिन्तक तथा कल्याण चाहनेवाला हो उसके हाथ के भोजन से तृप्ति होती है। मां के हाथ का बनाया और परोसा हुआ भोजन पुत्र के लिये (चाहे वह वृद्ध हो क्यों न हो) साक्षात् अमृत के समान गुणकारी है।

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य-पालन और सदाचार

पाँचवाँ पाठ (५)

१--यथार्थ कर्तव्य पालन करना वह है जिससे न अपना मन दुखो व दूषित हो और न दूसरे का।

२--किसी कार्य के लिये नियम बना लेना बहुत आसान है लेकिन उसके अनुसार कार्य करना कठिन है।

३--जिस तरह वृद्धावस्था पुरुष के सर्व-सौन्दर्य हर लेती है वैसे ही विषय-भोगों से पगा हुआ मन परमार्थ से सर्वथा विमुख कर देता है।

४--ज्ञान ही सुख के भंडार की कुन्जी है। अतः जिस तरह भी सम्भव हो उसे प्राप्त करना चाहिये।

५--महात्मा लोग भव-सागर से स्वयं पार होकर बिना कारण ही सहज स्वभाव से संसार समुद्र में डूबते हुये प्राणियों का उद्धार करने के लिये संसार में निवास करते हैं।

६--शरीर तथा मन से किसी प्राणी को किसी प्रकार का दुःख न देना ही अहिंसा धर्म है।

७--सत्य बोलने का अभ्यास सिद्ध होने पर वाक्य

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिद्धि हो जाती है। जो कुछ कहा जाय वह सब सिद्ध हो जाता है।

८–स्वार्थवश स्वधर्म तथा लज्जा का त्याग न करना चाहिये। कुत्सित कर्मों का त्याग करना ही लज्जा है। लेकिन लज्जा ही लज्जा नहीं है।

९–मूर्ख को सद्‌बोध का दान करना चाहिये जिससे उसका दुष्ट स्वभाव सुधर जाये।

१०–नित्य प्रति नियमानुसार श्री भगवान् की उपासना करने से मनुष्य के अनेक जन्मों के पापों का नाश हो जाता है और उसे भी श्री भगवान् के दर्शन अवश्य होते हैं।

११–निस्वार्थता से ही समाज, जाति, कुटुम्ब आदि जीवित और कायम रह सकते हैं। निस्वार्थ सेवा करने के लिये सदाचार की बहुत आवश्यकता है जो बिना ईश्वर भजन के कदापि सम्भव नहीं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिला सभ्यता और सदाचार

पाँचवां पाठ (५)

१–प्रत्येक गृह लक्ष्मी का धर्म है कि मन, वाणी तथा काया से पति की सेवा करते हुये सब प्रकार से उसको प्रसन्न रक्खे।

२–प्रत्येक महिला का धर्म है कि अपने घर की मर्यादा सुरक्षित रक्खे। जो महिलायें अपने घर गृहस्थी की साधारण अथवा असाधारण आर्थिक दशा तथा अन्य बातों को अपने स्वभाव व रुचि के अनुसार अपने शब्दों में पागकर दूसरों पर प्रगट करती हैं वे कुल कलंकिनी होकर अपने घर की मर्यादा को नष्ट करती है।

३–पति को प्रसन्न रखने के लिये पति के परिवार वालों, सम्बन्धियों, अतिथि अभ्यागत तथा घर में अन्य आने जाने वालों की सेवा पति की रुचि और रुख के अनुसार करना प्रत्येक महिला का धर्म है।

४–जो महिलायें अपने पति की कमाई तथा संपति व अन्य वस्तुओं को उनके भाई बन्धु तथा अन्य अधिकारियों की सेवा में लगते हुये देख कर मन में कुढ़ती हैं तथा समय-समय पर आन्तरिक व प्रकट

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूप से पति से कलह करती है और उनकी सेवा करने से पति को बंचित रखने के लिये नाना प्रकार की चुगली तथा अनेक प्रकार के जाल रचकर उनके प्रति पति के हृदय को दूषित कर देती हैं वे अपने पति की इहलौकिक एवं पारलौकिक मार्ग की यात्रा में विघ्नकारक होकर अपने पति की महान शत्रु तथा आत्मघातक है ऐसी दुराचारिणी महिलायें अपने जीते जी ही दारुण दुःख भोगकर अधोगति को प्राप्त होती है।

५-गृहलक्ष्मी का धर्म है कि घर में सबको एक सा भोजन परोसें जो महिलायें भेदभाव, पक्षपात रख कर अपने पति व अपने लड़कों बच्चों तथा अपने ही स्नेहियों को विशेष तौर पर उत्तम भोजन अथवा खाने की वस्तु अधिक और अन्य सम्बन्धियों को कम या घटिया और बासा कूसा भोजन परोसती अथवा देती हैं वे महापापिनी, चाण्डालिनी और दुराचारिणी हैं। उनके हाथ का बनाया हुआ और परोसा हुआ भोजन विष से भी अधिक हानिकारक तथा दुःखदायी है।

D. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

छठवां पाठ (६)

१–मनुष्य दरिद्री उसी समय तक है जब तक उसको केवल अपने ही पेट पालने और अपने ही दुःख की चिन्ता रहती है।

२–दुःख, कष्ट, आपत्ति में ग्रसे हुये शत्रु को भी सच्चे मन से यथा शक्ति सहायता करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

३–जो सब साधन प्राप्त होते हुये भी अपने भाई बन्धु, कुटुम्बी, सम्बन्धी इत्यादि की हीन दशा में उनकी बुराईयों का मनन करके उनकी सहायता करने से वंचित रहता है, उसके व्रत, तीर्थ, दान, पुण्य, एवं पूजा-पाठ इत्यादि सब साधनों का फल पापों में परिवर्तित हो जाता है।

४–दिन रात गृहस्थी के कामों में लिप्त रहने से मनुष्य के मन में बुरी भावनायें उठती रहती हैं जो शनैः शनैः हृदय में अपना घर करके सत्संग तथा महात्माओं के प्रति अरुचि पैदा कर देती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

पाठ (६)

१—महिलाओं की घरवालों के प्रति यह एक अति उत्तम सेवा है कि वे मन से अपने आध्यात्मिक अभ्यास तथा श्री भगवान् का स्मरण व ध्यान करते हुये गृहस्थी का प्रत्येक काम करें और घर में प्रत्येक प्राणी को भोजन कराते समय विशेष सावधान होकर सद्भावना रखते हुये अपने हृदय में भाव सहित श्री भगवान् का स्मरण व ध्यान बराबर जारी रक्खे।

२—श्री भगवान् की शरणागत होने का दृढ़ संकल्प उठते ही महान पापिनी और दुराचारिणी महिला भी पुण्यात्मा तथा सदाचारिणी बनने लगती है। इसलिये प्रत्येक महिला को श्री भगवान् की शरणागत होकर अपने धर्म के अनुसार भाव और प्रेम के साथ नित्यप्रति नियमानुसार श्री भगवान् की पूजा अवश्य करते रहना चाहिए।

३—गृहलक्ष्मी का धर्म है कि घर के प्रत्येक प्राणी के साथ सभ्यतापूर्वक, सदा दयालुता, प्रेम और उदारता का व्यवहार रखने की साधना करती रहें। उनमें से

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसी के भी साथ धर्मानुसार मर्यादा उलंघन करना अथवा घृणा करना असभ्यता है। यह समझना कि तुम उनको खिला रही हो महा पाप है। प्रत्येक प्राणी अपने अपने भाग्य से खाता है। न जाने किस पूर्व जन्म के प्रताप से एक दूसरे का मिलान हुआ है।

४–यदि महिलायें अपनी बहू को अपने घर की उत्तम तथा सच्ची शोभा देखने की उत्कंठा रखती हैं तो उनका कर्तव्य है कि वे सास का पद ग्रहण करने के प्रथम ही आत्मोन्नति तथा ईश्वर भक्ति की साधना द्वारा आदर्श, सच्ची, सदाचारिणी बनकर सांसारिक और व्यवहारिक कार्यों में प्रेम सहित सरल व सुगम रीति द्वारा क्रियात्मक रूप में बहू को बहुत ही उत्तम तथा सत्–शिक्षा देती रहें।

५–कुटुम्ब, समाज, देश तथा संसार के कल्याण के लिये कन्याओं को जितनी सांसारिक विद्या और गृह कार्य शिक्षा की आवश्यकता है उससे कहीं अधिक धार्मिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक विद्या की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान समय के गृहस्थाश्रम में पुरुषों की आत्मोन्नति तथा ईश्वर भक्ति स्त्रियों के पतिव्रत धर्म और सदाचार पर ही निर्भर है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य पालन और सदाचार

सातवां पाठ (७)

१—सत्संग की प्राप्ति तथा महात्माओं और सन्तों की कृपा कोई खिलौना या अल्प पुण्य का फल नहीं है जो प्रत्येक मनुष्य को आसानी से मिल सके।

२—सांसारिक दुःख और सुख के सहन करने की शक्ति बिना श्री भगवान् की उपासना के कदापि संभव नहीं। इसलिए इस पर विजय पाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को नित्यप्रति नियमानुसार श्री भगवान की आराधना अवश्य करते रहना चाहिये।

३—जिस स्थान पर श्री भगवान् की कथा कीर्तन सत्संग तथा ब्रह्मचर्चा हो रही हो वहां बातचीत करना या कानाफूसी करना पाप है।

४—सज्जनों की संगत से कभी दूर न होना चाहिये विनयपूर्वक उनका सम्मान करना चाहिये। सज्जन के हृदय कमल की रज फैलकर शीघ्र ही उसके पास बैठने वाले के सब पाप नष्ट कर देती है।

५—श्री भगवान् के भक्तों में दया और पवित्रता उसी भांति रहती है जैसे फूल में गन्ध बास करती है।

D. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६–किसी की सिधाई का खून करके उससे लाभ उठाना उसके साथ विश्वासघात करना है। क्योंकि किसी की सरलतासे लाभ उठाना उसको धोखा देना है।

७–किसी काम की सफलता के लिये दिन रात उधेड़बुन में रहने तथा चिन्ता करने से मानसिक व शारीरिक शक्ति नष्ट हो जाती है। इसलिए चिन्ता छोड़कर ईश्वर पर विश्वास करके उसकी सफलता के लिए यथा सम्भव प्रयत्न करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

८–नित्यप्रति किसी निश्चय समय पर बचपन से अब तक के जीवन की मानसिक परिक्रमा करने पर मनुष्य वैराग्यरूपी आश्रय पाकर श्री भगवान के कमल स्वरूपी चरणों में दृढ़ता के साथ प्रेम करने लगता है।

९–सत्संग से बढ़कर मनुष्य के कल्याण के लिये और कोई उत्तम वस्तु नहीं है। सत्संग से ज्ञान होने पर माया दुःखदायी के बदले सुखदायी हो जाती है। भगवान के भक्त माया के आधीन नहीं होते, किन्तु माया स्वयं उनके सामने सेवा करने के लिए हाथ जोड़े खड़ी रहती है परन्तु श्री भगवान के भक्तों को उसकी ओर देखने का अवकाश ही नहीं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

सातवां पाठ (७)

१--जिस माता ने अपनी सन्तान को श्री भगवान् की उपासना द्वारा सभ्य तथा सदाचारिणी बना दिया है उसने अपनी तथा अपनी माता की कोख को पवित्र करके समाज और देश की बड़ी सेवा की है।

२--माताओं का विशेष कर्तव्य है कि वे नित्य प्रति भाव और प्रेम के साथ श्री भगवान की उपासना अवश्य करती रहें और अपनी पुत्रियों को धर्मात्मा तथा सदाचारिणी बनाने के लिये बाल्यावस्था से ही उनको श्री भगवान की भक्ति के प्राप्ति के हेतु किसी प्रकार के आध्यात्मिक अभ्यास का साधन नित्यप्रति कराते हुये, पतिव्रत धर्म की महिमा तथा सास-ससुर की सेवा के महत्त्व को उनके हृदय में भली भांति अंकित करा दें।

३--जो सास श्री भगवान की उपासना के प्रभाव से अपनी पुत्रवधू के हृदय मन्दिर में भाव और रुचि के साथ अपने पुत्र प्रेम का स्वागत किया करती है वह अपनी पुत्र वधू के प्रेम की पात्र बन जाती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

आठवां पाठ (८)

१-सदाचार द्वारा ही सामाजिक जीवन की प्राप्ति हो सकती है क्योंकि सदाचार भेद-भाव और पक्षपात को छोड़कर सेवा करने की शिक्षा देता है अतः सदाचार सामाजिक जीवन की कुन्जी है।

२-परिवार वालों से प्रेम करना ईश्वरीय प्रेम करने का सरल व सुगम साधन है। जिसने अपने परिवार वालों से प्रेम नहीं किया वह प्रेम प्राप्त कष्ट व दुःखों का अनुभव न होने के कारण प्रेम के रहस्य से वंचित रहता है।

३-प्रत्येक मनुष्य को कुछ उपयोगी कार्य नित्यप्रति अवश्य करते रहना चाहिये। बेकार रहने से मनुष्य दूसरों के अवगुण और दोषोंको देखते रहने का अभ्यासी बन जाता है। जिसके कारण वह स्वयं दोषी और दुराचारी हो जाता है। ऐसे मनुष्यों को प्रायश्चित का साधन करते हुये अपने कल्याण तथा उद्धार के लिए श्री भगवान की उपासना तथा सत्संग नित्यप्रति अवश्य करते रहना चाहिये।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–किसी के गुप्त रहस्य को जो प्रगट नहीं करना चाहता उसको उचित तथा अनुचित उपाय से सुनने के लिए प्रयत्न करना तथा किसी के द्वारा उसके गुप्त रहस्य के पता लगाने का उपाय करना पाप है। श्री भगवान का स्वभाव है कि वे किसी के ऐब, दोष, पाप तथा गुप्त रहस्य को न देखते हैं और न किसी के द्वारा सुनना ही चाहते हैं। इसलिए श्री भगवान के भक्तों को भी ऐसा ही साधन करते रहना चाहिए।

५–समय को अमूल्य समझकर प्रत्येक स्वांस को भाव सहित श्री भगवान के स्मरण तथा ध्यान में लगाये रहने का अभ्यास तथा साधन करते रहने से मनुष्य को सदाचार की प्राप्ति होकर यथार्थ कर्तव्य पालन तथा सेवा करने की शक्ति प्राप्त होती है।

६–जब तक मनुष्य जिये तब तक उसे भवसागर से पार होने के लिए श्री भगवान की प्राप्ति के हेतु किसी न किसी प्रकार का अभ्यास तथा साधन अवश्य करते रहना चाहिए क्योंकि जीवन की प्रत्येक स्वांस अमूल्य है जब देह भस्म हो गई तो पश्चाताप का भी अवसर नहीं मिलता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

आठवां पाठ (८)

१–जो माता धर्मानुसार अपनी कन्या को आध्यात्मिक तथा व्यवहारिक उत्तम शिक्षा न देकर केवल कपड़े, गहने, शौक एवं फैशन की भिन्न भिन्न प्रकार की सामग्री जुटाकर उनको सुन्दर तथा मोहनी बनाने की चेष्टा करती हैं, वह स्वयं अपनी कन्या की महान शत्रु बनकर उसको असभ्य तथा दुराचारिणी बनने का कारण बनती हैं।

२–जो मातायें संकुचित और मलिन स्वभाव के कारण अपनी सन्तान को मेरे-तेरे पन की शिक्षा देती रहती हैं, वे स्वयं अपने को एवं अपनी संतान को कुटुम्ब, समाज तथा देश का द्रोही बनाकर अधोगति को प्राप्त होती हैं।

३–प्रत्येक माता का धर्म है कि अपनी संतान को बाल्यावस्था से ही क्रियात्मक रूप में कुटुम्ब प्रिय बनाने की शिक्षा देती रहें ताकि उनका निर्मल और पवित्र हृदय अगाध होकर कुटुम्ब, समाज तथा देश की सेवा का पात्र बनता जावे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–कन्या ही माता का सच्चा और सुन्दर आभूषण है संसार, जितनी सभ्यता तथा सच्चरित्रता का मूल्य आंकता है, उतना ही मूल्य उसके माता–पिता की सभ्यता, सदाचार और प्रतिष्ठा का माना जाता है। इसलिये प्रत्येक माता का विशेष धर्म है कि श्री भगवान की उपासना के प्रभाव से अपनी कन्या के गुणों को बालपन ही से तेजस्वी और चमकीला बनाने की साधना अवश्य करती रहें।

५-जो सास श्री भगवान की भक्ति से बंचित है उसे अपने पुत्र, पुत्र–वधू, कुटुम्बियों तथा अन्य सम्बन्धियों से कदापि सुख की आशा नहीं रखनी चाहिये।

६–महिलाओं का धर्म है कि घर में किसी भी व्यक्ति के श्री भगवान की पूजा करते समय बहुत सावधान होकर वे उसको पूजा करने में भरसक यानी अपनी शक्ति के अनुसार सहायता देने का प्रयत्न करती रहा करें।

७-जो महिलायें अपने पति तथा घर के अन्य सम्बन्धियों को श्री भगवान की पूजा करते समय किसी भी प्रकार का तथा किसी भी रूप में विघ्न डालती हैं वे अपनी असच्चरित्रता तथा दुराचरण का परिचय देकर कुटुम्ब, समाज और देश की महान शत्रु होकर अधोगति को प्राप्त होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

नवाँ पाठ (९)

१-संसार की प्रत्येक वस्तु में भय भरा पड़ा है, निर्भयता केवल वैराग्य तथा निष्काम कर्म में है कि जिसकी प्राप्ति श्री भगवान की उपासना विना कदापि सम्भव नहीं।

२-कंगाल होने से भलमनसाहत जाती नहीं और धनवान होने से भलमनसाहत आती नहीं। भलमनसाहत केवल सदाचार में है इसलिए सदाचार की प्राप्ति के लिये नित्यप्रति निश्चित २ समय पर श्री भगवान की उपासना करते रहने ही में भलमनसाहत है।

३-निर्धनी होते हुये भी श्री भगवान के भक्तों को अतिथि सत्कार में कोई वाधा नहीं पड़ सकती क्योंकि उनके पास आसन के लिये पवित्र भूमि, पांव धोने तथा पोने के लिये स्वच्छ जल और गदगद सत्यप्रिय वाणी द्वारा सन्तुष्ट करने का अभाव नहीं रहता।

४-श्री भगवान के भक्तों की आदर्श जीवनचर्या तथा सदाचार भगवत रूप होकर संसार के कल्याण का कारण होती है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

नवाँ पाठ (९)

१–जो महिलायें बंस स्वभाव के कारण श्री भगवान की पूजा में अरुचि रखती हैं उनको घर वालों के प्रति यही एक बड़ी सेवा है कि घर में मनुष्यों के पूजा करते और भोजन करते समय, कारण तथा अकारण बस किसी भी प्रकार से किसी भी रूप में कलह वाद-विवाद तथा बक-बक न किया करें किन्तु शांति का वातावरण रखने के लिये चुपचाप मौन बैठी रहा करें।

२–घर पर आये हुये अतिथि–अभ्यागत के लिये भोजन बनाने तथा धर्मानुसार अन्य किसी प्रकार का काम करने में जो महिलायें अरुचि रखती और झोंका-झांकी करती हैं वे अतिथि के भोजन तथा सेवा में विष का वघार लगाती हैं। जिसका प्रभाव केवल अतिथि पर ही नहीं पड़ता किन्तु घर के प्रत्येक प्राणी पर पड़ता है। इसलिये प्रत्येक महिला का धर्म है कि कि अतिथि सेवा में बहुत सावधान होकर धर्मानुसार अपना कर्तव्य पालन करें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

दसवाँ पाठ (१०)

१-श्री भगवान के भक्तों की आदर्श जीवनचर्या तथा सदाचार भगवत रूप होकर संसार के कल्याण का कारण होता है।

२-नित्यप्रति नियमानुसार भाव और प्रेम के साथ श्री भगवान की उपासना करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है अन्तःकरण शुद्ध होने से मन पवित्र होता है। मन के पवित्र होने से सत्य भाषण और अहिंसा का साधन स्वतः ही होने लगता है।

३-सदाचार और दुराचारों का विचारों से घनिष्ट सम्बन्ध है। विचारों की उत्पत्ति मन से है इसलिये सभ्य तथा सदाचारी बनने के लिये मन को श्री भगवान के चरणों में लगाकर अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित करना चाहिये।

४-मन को पवित्र, निर्मल रखने से दिव्य शक्तियों तथा गुणों का विकास होता है अपवित्र मन मनुष्य को दुराचारी और कुपथगामी बनाता है। मनको पवित्र बनाने के लिये सत्य भाषण और अहिंसा मुख्य साधन हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-जब तक शब्द अथवा वचन वाणी से नहीं निकलते तब तक वह मनुष्य के वस में रहते हैं परंतु मुंह से निकलते ही मनुष्य को उनके आधीन हो जाना पड़ता है। जो मुंह से निकले हुये शब्द का पालन करता है वह मनुष्य है और जो शब्द का पालन नहीं करता वह अपनी मनुष्यता का नाश करता है।

६-जो सच्चे सुख की चाहना रखता हो उसे दीन, अनाथ, दुखियों और पीड़ित प्राणियों की निःस्वार्थ सेवा करते हुये उनके हृदय मन्दिर में अपने इष्टदेव श्री भगवान के दर्शन करते रहना चाहिये।

७-जो मनुष्य एकान्त स्थान में श्री भगवान की उपासना द्वारा मन शान्त करने का अभ्यास नियमानुसार प्रतिदिन करता रहता है उसे बेचैनी के स्थान में शांति और दुर्बलता के स्थान में ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होती है।

८-यथार्थ में धनवान मनुष्य वह है जिसके पास द्रव्य तो नहीं है किन्तु पारमार्थिक तथा निस्वार्थ सेवा के गुण बहुत से हैं। दूसरों के दुःखों को दूर करने और उनको लाभ पहुंचाने में जो सच्चा सुख मिलता है वह धन द्वारा प्राप्त भोगविलास में कदापि नहीं है।

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

दसवां पाठ (१०)

१–महिलाओं का विशेष तथा महान कर्तव्य है कि वे धर्मानुसार अपने सास-ससुर की प्रेम और भाव सहित सेवा करती रहा करें। सास-ससुर की प्राप्ति प्रत्येक बहू को नहीं होती। महान तपस्या तथा पुन्य के फल से सास-ससुर मिलते हैं।

२–वर्तमान समय में गृहस्थाश्रम के लिये केवल आतिथ्य सत्कार ही महान पुन्य तथा मुक्ति का साधन है। धर्मानुसार भाव और प्रेम सहित आतिथ्य सेवा महिलाओं की सभ्यता, सच्चरित्रता, पतिव्रत और सतीत्व धर्म पर निर्भर है। किसी के घर से अतिथि का असंतुष्ट होकर लौट जाना श्री भगवान का निरादर करना है।

३–अतिथि उसको कहते हैं जिसके आने जाने का कोई समय निश्चित नहीं अर्थात् जो गृहस्थी के घर में बिना किसी स्वार्थ के केवल अपने पेट की क्षुधा निवारण हेतु अकस्मात आ जाय और अकस्मात चला जाय।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-माताओं का कर्तव्य है कि अपनी पुत्रियों को सांसारिक विद्या तथा गृह शिक्षा की योग्यता कराने के साथ ही साथ श्री भगवान की उपासना में भी भाव और प्रेम सहित दिन प्रतिदिन उन्नति कराती जावें। जिन कन्याओं के भाग्य में यानी (ललाट) में बालवैधव्य तथा अन्य प्रकार के दुखों के भोगने का विधान लिखा रहता है, श्री भगवान की उपासना के प्रभाव से उन सबका तथा अनेक जन्मों के संचित पापों का नाश होकर वे कन्यायें सुन्दर ईश्वर भक्त, सर्व गुण सम्पन्न, सदाचारी तथा दीर्घायु पति को पाकर माता-पिता तथा सास-ससुर के कुल को पवित्र और उज्ज्वल करके दोनों कुलों के उद्धार का कारण बनती हैं।

५-कन्याओं का विवाह होने के पश्चात वे बहू की पदवी को प्राप्त होती हैं। प्रत्येक बहू का धर्म है कि बहू का पद ग्रहण करते ही मन, वचन और कर्म से अपने पति के प्रेम की पात्री तथा अर्धाङ्गिनी बनने में स्वांस प्रतिस्वांस उन्नति करती जावे। नित्य प्रति नियमानुसार भाव और प्रेम सहित अपने इष्ट देव श्री भगवान की उपासना तथा धर्मानुसार अपने पति के पूजनीयों की यथायोग्य सेवा करने से यह गुण प्राप्त होता है।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

ग्यारहवां पाठ (११)

१–श्री भगवान की भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है और वही परमानन्द तथा पूर्ण शांति का स्थान है। अतएव प्रत्येक प्राणी का धर्म है कि वह श्री भगवान की भक्ति की प्राप्ति के लिए नित्यप्रति किसी न किसी प्रकार का कोई एक आध्यात्मिक अभ्यास तथा जन-साधारण की निःस्वार्थ सेवा करने का साधन अवश्य ही करता रहे।

२–जहां कष्ट और दुख अधिक होते हैं तथा जहां उनसे बचने के साधन नहीं जुटते, वहीं मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वहीं मनुष्य को ईश्वर में दृढ़ विश्वास होता है।

३–जो मनुष्य वास्तव में सच्चा सुख और चैन चाहता है उसे धन की ओर से चित्त हटाकर श्री भगवान की उपासना द्वारा हृदय शुद्ध करके सर्व-शक्तिमान्, निरन्तर एक समान रहनेवाले श्री भगवान् पर भाव और प्रेम सहित श्रद्धा रखते हुये निःस्वार्थ जनसेवा करने का साधन करते रहना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–जो चतुराई तथा छल छोड़कर सच्चाई के साथ श्री भगवान की प्राप्ति के हेतु आध्यात्मिक अभ्यास तथा साधन में प्रतिदिन लगा रहता है। उसे प्रति मिनट और प्रति घन्टे ईश्वरीय मार्ग में सफलता मिलती रहती है।

५–जिस प्रकार धनवान को अपने धन का, पहलवान को अपने बल का, विद्यावान को अपनी विद्या का और राजा को अपने राज्य का बल रहता है वैसे ही भक्त को अपने इष्टदेव श्री भगवान का बल रहता है।

६–भाव और प्रेम सहित श्री भगवान का स्मरण और ध्यान करने से मनुष्य आत्म बल द्वारा निर्भयता के साथ अधिक से अधिक कष्टों, दुखों और प्रत्येक प्रकार की असुविधाओं पर विजय प्राप्त करते हुये लौकिक, पारलौकिक एवं आध्यात्मिक दिव्य शक्तियों को अपने आधीन करके श्री भगवान का सच्चा भक्त बन जाता है।

७–जो मनुष्य किसी भी प्राणी का अनिष्ट चिंतन नहीं करता और शत्रुओं की उन्नति पर भी प्रसन्न होता है वही सदाचारी तथा श्री भगवान का सच्चा भक्त है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

ग्यारहवां पाठ (११)

१-वंश स्वभाव तथा संग द्वेष व नई सभ्यता की शिक्षा के अनुसार जो बहुयें धर्म के विपरीत अपने सास-ससुर की सेवा करने में अरुचि और घृणा रखती हैं वे महान पापनी और अभागनी होकर सुख और चैन से कदापि नहीं रह सकती। प्रत्येक बहू का धर्म है कि भाग्य वस यदि उसको सास-ससुर मिल जावें तो उसे अपना सुहाग बनाये रहने और लौकिक व पारलौकिक सुख व आनन्द की वृद्धि एवं श्री भगवान की प्राप्ति के लिये धर्मानुसार सेवा द्वारा सास-ससुर की आत्मा को सन्तुष्ट करते हुये उनका हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त करते रहना चाहिये।

२-प्रत्येक महिला का धर्म है कि अपने धर्म के अनुसार सेवा करने और अपना पतिव्रत एवं सतीत्व धर्म की रक्षा करने की शक्ति प्राप्त करने के लिये नित्यप्रति नियमानुसार श्री भगवान की उपासना अवश्य करती रहा करें।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३–महिलाओं का धर्म है कि जिस मातृ दृष्टि से वह अपनी पुत्रियों का पालन पोषण करती हुई उनको योग्य और उत्तम गृहणी बनाने का प्रयत्न करती हैं उसी मातृ दृष्टिसे भाव और प्रेम सहित अपनी पुत्रवधुओं का पालन पोषण करते हुये उनको दक्ष, सदाचारिणो तथा सच्चो पतिव्रता बनाने का उपाय करती रहा करें ।

४–जो महिलायें श्री भगवान की उपासना के प्रभाव से अपने पतिव्रत धर्म की आराधना द्वारा सेवा के रूप में नम्रता पूर्वक अपने पति के ब्रह्मचर्य और सदाचार की रक्षा करती हैं वे महाभागा अपने पति की आयु, कीर्ति और यश की वृद्धि करके जीवन भर सौभाग्यवती रहती हैं । और अपने पति के साथ सुख और आनन्द भोगते हुये अनायास ही भव सागर से पार हो जाती हैं ।

५–पति तथा घरके अन्य सम्बन्धियों से किसी धर्म कार्य में सहमत न होने के कारण महिलाओं को उनसे कलह, क्रोध तथा असहयोग नहीं करना चाहिए, किन्तु सेवा रूप में सत्य और प्रिय शब्दों में नम्रता के साथ निवेदन करके उस कार्य की अनावश्यकता तथा बुराई का परिणाम भली भांति स्पष्ट कर देना चाहिए ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

बारहवाँ पाठ (१२)

१-सच्ची प्रार्थना भाव और प्रेम सहित श्री भगवान अथवा उनके अनन्य भक्त से एक बार करने से उसका फल तत्काल मिलता है। सच्ची प्रार्थना करने की शक्ति प्राप्त करने के लिये नित्यप्रति नियमानुसार श्री भगवान की उपासना करते रहना चाहिये।

२-प्रत्येक मनुष्य को अपने हृदय में यह भली-भाँति अंकित कर लेना चाहिये कि प्रार्थना का मुख्य उद्देश्य पवित्र जीवन व्यतीत करना और श्री भगवान को प्राप्त करना है।

३-स्वार्थी और कृतघ्नी मनुष्य उसी समय तक अपने सम्बन्ध तथा मित्रता का परिचय दे सकता है, जब तक मूल रूप में उसे मान बड़ाई और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती जावे। उसके अभाव में वह भयंकर शत्रु होकर मृत्यु से भी अधिक दुखदायी होता है।

४-भाव और प्रेम सहित श्री भगवान के नाम का जाप करते रहने से जाप करने वाले के हृदय मन्दिर में श्री भगवान वास करने लगते हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-माता पिता को किसी भी दशा में तथा कभी भी साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिये। पिता की सेवा से जगतपिता श्री भगवान और माता की सेवा से जगतमाता श्री जगदम्बा संतुष्ट होते हैं। इनकी यथाविधि सेवा किये बिना लौकिक, पारलौकिक एवं किसी भी धर्म कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिये भाव और प्रेम-सहित माता पिता की सेवा करना साक्षात भगवान के सगुण रूपकी पूजा करनाहै।

६-मनुष्य जैसी संगति करता है उसी के अनुसार परिणाम को प्राप्त होता है। जैसे कि स्वाति की बूंद कदली में पड़ने से कपूर सीप में पड़ने से मुक्ता और सांप के मुख में पड़ने से विष हो जाती है। एक ही वस्तु भिन्न २ स्वभाव वालों के संग में पड़ कर तीन प्रकार के फलों को प्राप्त होती है। अतएव सदाचारी, ईश्वर भक्त और संतों की संगत करके श्री भगवान को प्राप्त कर लेना चाहिये।

७-श्री भगवान की उपासना के प्रभाव से जो मनुष्य अपनी जिह्वा को अपने वस में कर लेता है वह सारी लौकिक एवं पारलौकिक इच्छाओं और विषयभोगों को अपने आधीन करके निर्भय पद तथा ब्रह्मानन्द को प्राप्त होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

बारहवां पाठ (१२)

१–महिलाओं का धर्म है कि गृहस्थी के काम के लिये यदि अपने पड़ोसिन आदि से कोई चीज मांग कर लेवें तो उस वस्तु को लापरवाही से काम में न लावें, इतना ही नहीं किन्तु अपनी वस्तु से भी अधिक उसे सम्भाल कर रक्खें और जितने दिन के लिये जो वस्तु ली गयी हो उसको उतने ही दिन में नम्रता पूर्वक सुरक्षित लौटा देना चाहिये।

२–प्रत्येक महिला अपने घर की गृहलक्ष्मी है। उसका कर्तव्य है कि आडम्बर तथा फिजूल के कामों में रुपया नष्ट न होने दे। परन्तु आर्थिक तथा पारमार्थिक आवश्यकीय कामों में लोभवश पैसा जोड़ने की इच्छा से दाव पेंच लगाकर अथवा किसी प्रकार कलह करके उसमें रुकावट भी न डाले। लोभवश धर्म के कार्यों में जो महिलायें बाधा डालती हैं वे चाण्डालिनी, दुराचारिणी होकर अधोगति को प्राप्त होती हैं और अपने पति की आयु, यश कीर्ति और वैभव का नाश कराकर उसे भी नरकगामी बनाती हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३–महिलाओं का धर्म है कि यदि स्वयं उन्होंने अथवा उनके घर वालों में से किसी ने यदि किसी के साथ सेवा रूप में विशेष सहायता की हो तो वे उसे यह ज्ञान के रूप में जताने का प्रयत्न न करें और न उसका बदला पाने की आशा ही करें किसी के साथ की हुई सेवा को उपकार के रूप में प्रकट करते फिरना असभ्य तथा दुराचारणी महिलाओं का काम है।

४–जो महिलायें दिनरात अपने ही स्वार्थ की पूर्ति की भावना रखते हुये अपने पति की आर्थिक दशा तथा स्वास्थ्य इत्यादि का विचार नहीं रखतीं वे असभ्य तथा दुराचारिणी हैं।

५–सास-ससुर के जीवनकाल में जो बहुएँ पति की कमाई पर अपना अधिकार तथा शासन रखती हैं व अपने सास-ससुर और उनके परिवार वालों की आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान नहीं देतीं वे अपने पति को असभ्य, दुराचारी, पापात्मा और कुल-घातक बनाती हैं। और स्वयं भी अपने जीवनकाल में अनेक प्रकार के कष्ट और दुःखों को भोगकर नरक तथा महान अधोगति को प्राप्त होती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

तेरहवां पाठ (१३)

१–जब कोई मनुष्य श्री भगवान को उपासना तथा पूजा कर रहा हो तो उस समय आवश्यकीय काम होने पर भी किसी को उसके सामने न जाना चाहिये और न ऐसी कोई बातचीत, शब्द तथा आहट को प्रयोग में लाना चाहिए कि जिससे उसका मन पूजा से विचलित हो जावे, क्योंकि उस समय वह एक ऐसे की सेवा में है कि जिससे बढ़कर सारे ब्रह्माण्डों में दूसरी कोई दिव्य तथा उत्तम शक्ति नहीं है।

२–जो मनुष्य अपने सुख तथा स्वार्थ की पूर्ति के लिए कारण अथवा अकारणवश किसी भी प्राणी का दिल दुखाता है उस दुखे हुये तथा पीड़ित दिल से उसके दिल दुखाने वाले के सुख और स्वार्थ का जड़मूल से नाश हो जाता है और वह नरकगामी होकर अधो-गति को प्राप्त होता है। इसलिये किसी भी दशा तथा किसी भी परिस्थिति में, किसी भी प्राणी के दिल दुखाने का कारण नहीं बनना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३-जिस स्थान पर सत्संग, पूजा-पाठ, उपदेश, ज्ञान-चर्चा तथा श्री भगवान की कथा का निरूपण हो रहा हो वहां किसी से बातचीत करना या कानाफूसी करना महान पाप तथा असभ्यता है। ऐसे पवित्र स्थान पर पहुँचकर चुपचाप बैठकर अपने महान् पुण्य का उदय समझकर सत्संग लाभ प्राप्त करने में ही अपना सारा समय व्यतीत करना चाहिये।

४-प्रत्येक छोटे व बड़े काम में तथा साधारण व असाधारण विपत्ति व संकट में ईश्वर का स्मरण करने से बहुत शीघ्र मन में विलक्षण बल आ जाता है। इसलिए शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं और दुखों से बचने के लिये भाव और प्रेम सहित निरन्तर अपने इष्ट देव श्री भगवान का स्मरण करते रहना चाहिये।

५-केवल उच्च पदों पर काम करने तथा धनवान होने से कुल उत्तम नहीं कहा जा सकता। वंश, कुल एवं खानदान वही उत्तम और जगत पूज्य है जिसमें श्री भगवान की भक्ति की वृद्धि होकर निःसहाय और दुखी प्राणियों की भाव और प्रेम सहित निरन्तर सेवा होती रहे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

तेरहवां पाठ (१३)

१-पुरुषों की सांसारिक तथा पारमार्थिक कार्यों के करने के कारण समय समय पर शारीरिक तथा मानसिक थकावट स्वाभाविक ही हो जाया करती है। इसलिए महिलाओं का धर्म है कि घर गृहस्थी के कामों की बातें अथवा अन्य किसी प्रकार की बातें पुरुषोंसे उस समय करें जब वे अपनी थकावटको दूर करके ठीक हालत में हों। बेमौका स्वार्थ अथवा पमार्थ की कोई बातचीत करना केवल असभ्यता ही नहीं है किंतु पुरुषों के हृदय को चोट पहुंचाकर उनको दुःख देना है।

२-धर्मानुसार घर गृहस्थी के प्रत्येक कार्य की कर्ता तथा संरक्षिका स्वयं गृह-स्वामिनी ही है। गृह-स्वामिनी की थोड़ी भी असावधानी तथा असभ्यता से कभी २ भयंकर हानि होकर घर का सर्वनाश हो जाता है। इसलिए प्रत्येक गृह-स्वामिनी का धर्म है कि श्री भगवान के प्रति अपनी पूरी जवाबदेही और जिम्मेदारी समझकर घर गृहस्थी का जो भी काम करें, खूब सोच विचार करने के पश्चात् सावधान होकर भली भांति किया करें।

Nanaji-Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३–जो महिलायें एकांत में समय पाकर किसी की बहू बेटी को घर फोड़ी बातों की शिक्षा देकर उनको असभ्य तथा दुराचारणी बनाती हैं, वे विश्वाश-घातनी अपने किये हुये दूषित कर्मों का फल अपने जीवनकाल ही में पाकर अनेक प्रकार की पीड़ायें, व्यथायें और दुख भोगते हुये महान पातकनी, चांडालनी तथा दुराचारणी होकर नरक गामनी होती हैं।

४–जो महिलायें अपना समय श्रंगार करने तथा फैशनेबुल बनने ही में व्यतीत करती हैं वे अपनी आत्मा को निर्बल और अशांति का स्थान बनाती हैं। अतएव महिलाओं को अपने पहिराव, उढ़ाव में सादगी रखना चाहिये।

५–गृहस्वामिनी का धर्म है कि घर पर आई हुई महिलाओं का आदर सत्कार, शील स्वभाव तथा नम्रता से करें। इस बात की साधना करती रहें कि अनुचित शब्द तथा गाली गलौज एवं किसी की निन्दा न होने पाये। घर पर आई हुई किसी भी महिला का असन्तुष्ट होकर लौट जाना महान असगुन होकर दुःख का कारण बन जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

चौदहवां पाठ (१४)

१–वह सत्यता और ईमानदारी किसी काम की नहीं जिसमें नम्रता, प्रेम और निस्वार्थ सेवा की वृद्धि न हो। सत्य और ईमानदारी के प्रकाश में यदि स्वार्थ और अंधकार का नाश न हो तो वह सत्यता और ईमानदारी कदापि नहीं है किन्तु धोखा के रूप में पूर्ण असत्य और हिंसा ही है।

२–प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने पुरुषार्थ से अपना निर्वाह करे। जो अपने सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों के बल पर जीवन निर्वाह करता है अथवा उनके नाम से यश और कीर्ति प्राप्त करता है वह पुरुषार्थ हीन हो जाता है और अपने कल्याण मार्ग से गिर कर अधोगति को प्राप्त होता है।

३-धार्मिक, पारमार्थिक और आध्यात्मिक कामों के नाम पर धन बटोरना और फिर उसको उन सतकार्यों की बजाय अपने मनमाने तथा निजी कामों में खर्च करना, धन देने वालों को साफ धोखा देकर विश्वासघाती, कृतघ्नी तथा महान पातकी बनना है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–पूर्णता केवल श्री भगवान में है। मनुष्य श्री भगवान का अंश है इसलिये मनुष्य में किसी न किसी प्रकार की कमी का रहना स्वाभाविक ही है। किसी भी प्रकार की कमी को पूरा करने का सरल व सुगम उपाय यह है कि मनुष्य जितना दूसरों की आवश्यकताओं और कमी को पूरा करने का साधन करता रहेगा उससे कई गुने अंशों में उसकी आवश्यकता तथा कमी श्री भगवान की कृपा से स्वतः ही पूरी होती जावेगी।

५–प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह पहले अपने वर्णाश्रम धर्म के अनुसार काम करे, उसके पश्चात श्री भगवान की उपासना करे, इन दोनों क्रियाओं के मिलन साधन से शरीर व मन दोनों पवित्र होकर सदाचार और श्री भगवान की अटूट भक्ति प्राप्त होती है।

६–अपने पर कितनी भी विपत्ति आवे तो भी श्री भगवान की उपासना नहीं छोड़नी चाहिए। विपत्ति तथा संकटकाल में श्री भगवान के स्मरण से ही कठिन समय को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे समय में मूक तथा हार्दिक प्रार्थना से बड़ी सहायता मिलती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

चौदहवां पाठ (१४)

१—महिलाओं का कर्तव्य है कि वे इस बात की सावधानी रखें कि निद्रा के स्थान में मिट्टी के तेल या गैस का दीपक बिना चिमनी के न रखा जाय। सोने के कमरे में पत्थर के कोयले की अग्नि भी न रखना चाहिये। पत्थर के कोयले की आगी से भयंकर हानि उठानी पड़ती है पत्थर के कोयले की गैस से कभी २ मनुष्य मर भी जाते हैं।

२—किवाड़ अथवा अन्य स्थानों के छिद्रों में से चुपचाप कान अथवा आखें लगाकर किसी के घर की कोई बात सुनने अथवा देखने का प्रयत्न करना कुलटा और फूहड़ स्त्रियों का काम है।

३—बहुधा महिलायें घर गृहस्थी का काम न होने अथवा काम होते हुये आलस्य बस काम न करके दिन में सो जाया करती हैं। दिन में सोने से कफ, आलस्य और जड़ता बढ़ती है। दिन अथवा सूर्य के प्रकाश में सोने से अधिक स्वांस व्यर्थ निकल जाते हैं जिससे आयु क्षीण होती है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-जो सास अपनी बहू को टोंचना देकर उनके माता पिता तथा उसके कुटुम्बियों को दोषी ठहरा कर उनकी निन्दा करती हैं, वह स्वयं अपनी बहू को अपना शत्रु बनाती है। बहू के आने पर सास को बहुत सावधान होकर अपने सदाचार का परिचय देते हुये प्रेम और भाव के साथ सभ्यता पूर्वक बहू के साथ व्यवहार करना चाहिये।

५-सास का हृदय बहुत पवित्र और गम्भीर होना चाहिये। बहू की त्रुटियों को उसके ससुर, पति तथा अन्य किसी पुरुष या स्त्री को कदापि नहीं जताना चाहिये। बहू को बहुत लालन पालन के साथ घर गृहस्थी का काम सिखाना चाहिये और उसकी त्रुटियों को अपने आत्म बल तथा सदाचार द्वारा शनैः शनैः दूर करके उसे सभ्य तथा सदाचारणी बनाना चाहिये।

६-स्त्री का धर्म है कि यदि पति विरोधी तथा दुराचारी हो तो भी प्रसन्नता पूर्वक पति के सम्मान तथा सेवा में किसी प्रकार की भी कमी न करें और अपने सदाचार तथा ईश्वर भक्ति द्वारा उसको सत मार्ग पर लाने की चेष्टा करती रहें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

पन्द्रहवाँ पाठ (१५)

१–ईश्वरीय नियम है कि श्री भगवान की उपासना के पश्चात मनुष्य जिस इच्छा की पूर्ति के लिये प्रार्थना करता है वह अवश्य स्वीकृत होती है। इसलिये मनुष्य को बहुत सावधान होकर के ऐसी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए जो जन्म-मरण के चक्कर में न डालकर सच्चे सुख और निरन्तर आनन्द के देने वाली हो।

२–रोने से हृदय का संताप दूर होता है। संसारी मनुष्यों के सामने रोने से मनुष्य पुरुषार्थ हीन, तेज हीन तथा बुद्धिहीन होकर मनुष्यता से गिर जाता है। परन्तु श्री भगवान के सामने रोने से मनुष्य के जन्म जन्मान्तर के पाप एक ही घड़ी में धुलकर वह ऐश्वर्य तथा श्री भगवान को प्राप्त होता है। इसलिए संसारी मनुष्यों के सामने झाँका झांकी करना तथा रोना छोड़ कर अपने हृदय की सब प्रकट व गुप्त बातें एकान्त में श्री भगवान को ही सुनाना चाहिए।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३–विद्यार्थियों को चाहिए कि जब कभी घर से पैसे मिलें तो उसे बचाकर दीन दुर्बल तथा निर्धनी विद्यार्थियों को देवें। ऐसे विद्यार्थियों की स्वयं सेवा करना और माता पिता के द्वारा भी उनके दुख दूर करने की चेष्टा करने वाले विद्यार्थियों से श्री भगवान बहुत प्रसन्न होते हैं और उनके अंतःकरण को पवित्र करके उनकी सब इच्छाओं को पूरा करते हैं।

४–विद्यार्थियों का धर्म है कि वे माता, पिता, वृद्धों और गुरुजनों की पूजा तथा सेवा करने की साधना करने के साथ ही साथ भगवान की पूजा भी सीखते जावें। श्री भगवान की पूजा से सदाचार की प्राप्ति हो करके विद्या तथा ऐश्वर्यता की दिन प्रतिदिन उन्नति होती जाती है।

५–अपने पूज्यनीय तथा वयोवृद्ध यदि विशेष प्रेम आदि के कारण आपका सम्मान करने के लिये प्रणाम करें तो इस बात की विशेष प्रकार से सावधानी रखना चाहिये कि उन्हें आपसे पहले प्रणाम करने का अवसर ही न मिलने पाये। तात्पर्य यह है कि वे प्रणाम करें उसके पहले ही उनको प्रणाम कर लेना चाहिये।

D. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिला सभ्यता और सदाचार

पन्द्रहवां पाठ (१५)

१–आजकल प्रायः पढ़ी लिखी स्त्रियों का स्वास्थ्य बहुत गिरा रहता है। उसका मुख्य कारण यह है कि महिलायें घर गृहस्थी के कामों में परिश्रम नहीं करतीं और मनोरंजक नाविल व गंदी पुस्तकों को देखा करती हैं। जिससे उनकी पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है और शारीरिक तथा मानसिक शक्ति दुर्बल होकर खोटे और गंदे विचारों की उत्पत्ति होती है। महिलाओं के लिये खोटे और गंदे विचार लिकोरिया, प्रदर तथा हिस्टोरिया आदि रोगों के प्रधान कारण हैं। इसीलिये प्रत्येक श्रेणी की महिलाओं को इन रोगों से बचते रहने तथा श्री भगवान की भक्ति की प्राप्ति के लिये नित्य प्रति घर गृहस्थी के कार्य में भाव और प्रेम सहित परिश्रम तथा आध्यात्मिक अभ्यास व साधन अवश्य करते रहना चाहिये।

२–स्त्रियों की सुन्दरता, उनके रूप की सुन्दरता तथा फैशनेबुल कपड़े पहिनने तथा श्रृंगार करने व आभूषण धारण करने में नहीं है किन्तु सदाचार, सद्गुण और पतिव्रत धर्म पालन करने में है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३-यदि बाहर से कोई महिलायें घर पर आई हुयी हों तो गृहस्वामिनी का धर्म है कि उनके पास उपस्थित रह करके उनका यथा योग्य सम्मान तथा समयानुसार आदर पूर्वक व्योहार तथा बातचीत करें। उस समय यदि कोई आवश्यकीय कार्य भी आ जाय तो उसके लिए घर पर आई हुई महिला से आज्ञा प्राप्त करके क्षमा मांग लेना चाहिये।

४-आजकल असभ्य, दुराचारणी, घर फोड़ एवं कुटिनी स्त्रियों की संख्या बढ़ती जाती है। इसलिये कुलीनों तथा भले घराने की बहू बेटियों और महिलाओं को अपने सदाचार तथा सतीत्व की रक्षा करने के लिए सावधान होकर उनके कुसंग से सदैव बचते रहना चाहिये। एकान्त में कोई बातचीत उनसे कदापि नहीं करना चाहिये। वे एकान्त पाकर कैसी भी कोई अच्छी या बुरी बात कहें उसे अपने घर वालों को निर्भयता के साथ तुरन्त ही प्रकट कर देना चाहिये ऐसी साधना करने से ही वे अपने सच्चरित्रता तथा सतीत्व धर्म की रक्षा में श्री भगवान की कृपा से विजय प्राप्त कर सकती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

सोलहवां पाठ (१६)

१–जो आयु में, पद में, प्रतिष्ठा में अपने समान हो और आपस में शिष्टाचार तथा प्रणाम का व्योहार चालू हो तो सदा दूसरे के द्वारा पहले प्रणाम की आशा नहीं रखनी चाहिये। भलमनसाहत और सभ्यता इसी में है कि उनसे पहले ही आप प्रणाम करलें।

२-श्री भगवान की उपासना से स्मरणशक्ति तो इतनी बढ़ती है कि थोड़े ही समय में मनुष्य बहुत से विषयों को कंठाग्र और हृदयस्थ कर लेता है। इसलिए विद्यार्थियों को अपने पात्रानुसार भाव और प्रेम सहित श्री भगवान की उपासना विशेष प्रकार से नित्यप्रति अवश्य करनी चाहिये।

३–सन्ध्या-वंदन, गायत्री जाप अथवा महामन्त्र के जाप व तर्पण नित्य करने से बुद्धि सबल और सात्विक होती है। सब पाप जो काम, क्रोध, मोह, लोभ, दम्भ, अहंकार, कपट, लम्पट, पाप, छलछिद्र से उत्पन्न होते हैं वे नाश हो जाते हैं। और भगवान की सच्ची भक्ति प्राप्त होती है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–जिस काम के करने में भय, शंका और लज्जा का अनुभव न हो उस काम के करने से शारीरिक और मानसिक बल की वृद्धि होकर आत्मोन्नति तथा सदाचार की प्राप्ति होती है। जिस काम के करने में भय, शंका और लज्जा का अनुभव हो उससे अधर्म की वृद्धि होकर आत्मबल नष्ट हो जाता है। और मनुष्य दुराचारी तथा पापी होकर अधोगति को प्राप्त होता है।

५–प्रणाम करने की भारतीय प्रथा दोनों हाथ जोड़ना और वयोवृद्ध तथा पूज्यनीयों के भाव और प्रेम सहित पैर छूना है। सिर को एक हाथ लगाकर सलाम करने की भांति प्रणाम करने को पद्धति असभ्य, तिरस्कार तथा अमंगलमय है। बच्चों को भारतीय प्रथा के अनुसार प्रणाम करने का साधन कराते रहने से जीवन पर्यन्त वे सदाचारी तथा सर्वप्रिय होते हैं।

६–जिस किसी से मिलने का जो समय निश्चित किया गया हो, अपने आवश्यक कार्यों को भी छोड़कर उससे ठीक समय पर मिलने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि कारणवश ऐसा न हो सके, तो समय से पहले ही सूचना देते हुये क्षमा मांग लेना चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

सोलहवाँ पाठ (१६)

१-पति जिस समय कारण अथवा अकारणवश क्रोध में होकर कड़े वचन कहे अथवा किसी प्रकार का खोटा व्योहार करे, उस समय स्त्री को चुपचाप रहना ही बहुत आवश्यकीय है। श्री भगवान ने स्त्रियों को कोमल स्वभाव वाला बनाकर सहन शक्ति प्रदान की है। जो स्त्री पति के क्रोध करने पर क्रोधित होकर पति को अनुचित बातों तथा कामों का बदला लेने के लिये तैयार हो जाती है वह अपने पतिव्रत धर्म को भंग करती है और समाज में निंदनीय होकर नरक गामिनी होती है।

२-जो स्त्री अपने पति का दोष और भूल चूक देखते ही उससे क्रुद्ध हो जाती हैं तथा अपने पति की भूल चूक को दूसरों को सुनाने में कुछ भी नहीं हिचकती और घर में क्लेश और लड़ाई झगडे फैला कर रोती रहती है, तथा खाना पीना त्यागकर पति को निरर्थक दोष दिया करती हैं वह महा पापनी, चाण्डालनी और दुराचारिणी होती है। साध्वी स्त्रियों को ऐसी कुल्टा स्त्रियों के कुसंग से सदैव बचते रहना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३-स्त्री का धर्म है कि यदि पति विरोधी तथा दुराचारी हो तो भी प्रसन्नतापूर्वक पति के सम्मान तथा सेवा में कमी न करे। किन्तु अपने सद्‌आचरण तथा सतीत्व धर्म द्वारा उसको आदरपूर्वक सेवा रूप में सतमार्ग पर लाने की चेष्टा करती रहे।

४-प्रत्येक सास जो बहू को उत्तम शिक्षा देने के बजाय उसकी त्रुटियों को उसके पति एवं उसके ससुर तथा अन्य स्त्री पुरुषों को सुनाया करती है, वह अपने भाग्य की अच्छी रेखाओं को मिटाकर अभाग्य की रेखा खींचती है। और उसी के अनुसार घर में अभाग्य का प्रवेश कराती है। ईश्वर की उपासना करने से घर के वातावरण में बहुत सुधार हो सकता है।

५-पक्षियों की माता जिस प्रकार अपने पर न निकले हुये बच्चों को अपने परों से ढक कर सरदी गर्मी और हवा से उनकी रक्षा करती हैं तथा अपनी चोंच में भोजन भर कर उनको भोजन कराती हैं। उसी प्रकार साध्वी व पतीव्रता स्त्री का धर्म है कि मन वचन और कर्म से अपने सतीत्व धर्म द्वारा यत्न के साथ अपने स्वामी के सदाचार की रक्षा और शरीर की सेवा करती रहे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

सत्रहवां पाठ (१७)

१–किसी सजीव सुख दुःख का अनुभव करनेवाले प्राणी को मारकर खाने की इच्छा ही मनुष्य में हिंसा वृत्ति और पाशविक भाव उत्पन्न करती है। अतः जो अपने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति अथवा श्री भगवान की भक्ति प्राप्त करना चाहते हों उन्हें मांस मछली आदि का त्याग कर ही देना चाहिए।

२–पूर्व और दक्षिण की ओर सिर करके सोने से शारीरिक और मानसिक व्यथायें दूर होती हैं। पश्चिम और उत्तर की ओर सिर करके सोने से मस्तिकशक्ति क्षीण होकर सिर के व मानसिक तथा शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार पूर्व और उत्तर की ओर मुंह करके बैठकर पूजा, पाठ ध्यान धारणा आदि देव कार्य करने से आत्मोन्नति तथा श्री भगवान की भक्ति में वृद्धि होती है।

३–अपनी सन्तान के सुधार के लिये जब तक मनुष्य स्वयं सदाचार व्रत का पालन नहीं करेगा, तब तक उसके उपदेश का प्रभाव सन्तान पर नहीं पड़ेगा।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-अपने घर आये हुए का यदि वह शत्रु भी हो तो भी तिरस्कार तथा अनादर करना महान असभ्यता तथा पाप है। घर पर आये हुये शत्रु का भी प्रेम-पूर्वक शिष्टाचार तथा सत्कार वैसा ही करना चाहिये जैसा कि सर्व साधारण के साथ किया जाता है।

५—जो माता-पिता अपनी संतान को सुधारने का साधन नहीं करते, वह अपनी संतान के महान शत्रु हैं। समय आने पर वह संतान भी क्रियात्मक रूप में अपने माता-पिता से शत्रुता का बदला लेगी। आजकल घर-घर में प्रायः कलह होने का यही कारण है।

६—संतान का प्राप्त होना उतना कठिन नहीं है कि जितना उसको संसार के उपयोग के लिये बनाना कठिन है।

७-गुरू किसी भी श्रेणी के हों, सभी शंकर रूप हैं। सबसे प्रथम गुरू माता है। इसके पश्चात पिता गुरू है। जिन्होंने बालपन ही से इन दोनों की आज्ञा का पालन करते हुये इनका सत्कार किया, वह निरंतर उन्नति करते जाते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

सत्रहवां पाठ (१७)

१–सास का कर्तव्य है कि बहू आने के पहले वह बहू की मां बन जावे। ऐसा होने से सास बहू में वैसा ही प्रेम बना रहेगा, जैसा कि मां बेटी में होता है। सास को चाहिये कि वह ईश्वरोपासना व प्रार्थना द्वारा बहू को अपनी पुत्री के समान बना ले। बहू को भी इतना सावधान होना चाहिये कि वह अपनी सास को अपनी मां के समान ही प्रेम करने का साधन करती रहे। शनैः शनैः साधन में सफलता अवश्य मिलेगी। बिना प्रेम के अनुशासन नहीं रहता। अतः सास का प्रेम बहू के प्रति अगाध होना चाहिये।

२–सास और बहू के बीच में मां और बेटी जैसा सम्बन्ध बिना ईश्वर कृपा के संभव नहीं। अतः सास और बहू दोनों का कर्तव्य है कि नित्यप्रति निश्चित निश्चित समय तक प्रार्थना तथा श्री भगवान की उपासना के लिये समय निकालें, जैसा कि प्रातःकाल उठते ही शौचादि के लिये समय निकालना अनिवार्य है। कम से कम आधा घंटा का समय ईश्वर की पूजा के लिये अवश्य देना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३–श्री भगवान की प्राप्ति के हेतु स्त्रियों के लिये पति से प्रथक होकर उपवास, व्रत आदि अन्य साधन करने का अधिकार नहीं है। जो स्त्री शरीर, मन और वाणी के द्वारा भाव और प्रेम सहित अपने पति को सब प्रकार से संतुष्ट रखती है, वह ब्रह्मानन्द को प्राप्त होकर अपने पति के साथ भव सागर से अवश्य पार होती है।

४–जिस प्रकार पति सुखी और संतुष्ट रह सके और जिस प्रकार उसकी उन्नति हो पतिव्रता स्त्री सदा ऐसे कामों से ही प्रेम रखती है और मरण तक भी पति का हित करने वाले कामों में आलस्य नहीं करती। स्त्रियों का धर्म है कि पति को अप्रिय लगने वाले कोई काम कदापि न करें।

५–जिस प्रकार सास अपनी बहू की त्रुटियों को देखकर मुंह लटकाकर, प्रकट या गुप्त रूप में क्रोध करती है, तो उसको निश्चय कर लेना चाहिये कि जब उसकी पुत्री ससुराल में जायेगी, तो उसकी भी यही दशा हो जावेगी। अतः सास को बहुत गम्भीर होते हुये प्रेम और भाव के साथ बहू को उसी तरह से शिक्षा देनी चाहिये, जैसी कि अपनी पुत्री को।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

अठारहवाँ पाठ (१८)

१-किसी भी अपढ़ मनुष्य का निरादर नहीं करना चाहिये। केवल अक्षर ज्ञान से सभ्यता नहीं आती किन्तु सदाचार से, बेपढ़े मनुष्य शीलवान व गुणवान देखे गये हैं। कितने ही विद्वान अभिमानी और दुराचारी भी हुआ करते हैं। सौगंध खाने की आदत कभी नहीं डालना चाहिये। कसम खाने वालों को ही अवसर झूठा पाया जाता है। सत्य बोलने वाले का सभी विश्वास करते हैं।

२-विद्या गुरू के द्वारा बुद्धि का विकास होकर सदाचार की दीक्षा मिलती है। अतः विद्या गुरू की मन-कर्म-बचन से सेवा करने से उनके आशीर्वाद से विद्या में सफलता अवश्य मिलती है।

३-विद्यार्थियों के माता-पिता एवम् संरक्षकों का धर्म है कि वे स्वयं अपनी संतान के विद्या गुरु के प्रति मन-कर्म-वचन से सत्कार करें और अपनी संतान को उनकी आज्ञा एवं सत्कार करने की प्रेरणा देते रहें। उनकी देखादेखी स्वयं भी विद्यार्थी उनका अनुसरण करने लगेंगे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-चाहे किसी धार्मिक स्थान, बाजार मेले इत्यादि में किसी का धक्का लग जाय या पानी वगैरह गिर जाय या अन्य कोई खराब काम हो जाय तो तुरन्त ही क्षमा मांग कर उसे भाव प्रेम के साथ शांत कर देना चाहिये।

५-दूसरे लोगों के एहसान को अपने ऊपर कम लादो, किन्तु स्वयं अधिक से अधिक सेवा रूप में उपकार कर देने पर भी, उसके बदले की आशा नहीं करनी चाहिये।

६-जिस किसी ने अपने प्रति चाहे थोड़ा ही उपकार किया हो उससे कहीं अधिक उसके साथ उपकार करना धर्म है।

७-यदि किसी कारणवश किसी की कोई वस्तु अपने हिस्से से अधिक आ गयी हो, तो नम्रतापूर्वक शीघ्र से शीघ्र वापिस लौटा देना चाहिये।

८-अपने घर में यदि बाहर से स्त्रियां आयें और उनसे मिलना आवश्यकीय हो तो रिश्ता या आयु के अनुसार उनसे 'माताजी', 'बहिनजी' आदि शब्दों से नम्रतापूर्वक सम्बोधन करना चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

अठारहवां पाठ (१८)

१-पति के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति से आंख मिलाना, मुस्कराना, बातें करना दुराचारिणी स्त्रियों का काम है।

२-पत्नि पति की योग्या एवम् विश्वश्यनीय अर्द्धाङ्गनी है। उसका उद्देश्य काम वासना को तृप्ति करना ही नहीं है, पति के दुख, दर्द एवं कठिनाइयों में वह उसकी सहायक है। पति को चिन्ताओं से छुटकारा पाने के लिये पति का पत्नी बायां अङ्ग है। अतः क्रियात्मक रूप में अपने को सिद्ध करने से पत्नी सदैव ही अपने पति की प्राणवल्लभा बनी रह सकती है।

३-शुद्ध तथा पवित्र आचरणों द्वारा पति के वास्तविक सुख और शान्ति का साधन करने को पति सेवा कहते हैं।

४-गृह लक्ष्मी का धर्म है कि जिस तरह वह शरीर को साफ सुथरा रखती है, उसी प्रकार अपने मन को शुद्ध व निर्मल रक्खे। इसके लिये धर्मानुसार ईश्वर की उपासना प्रतिदिन निश्चित समय पर अवश्य करती रहे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–जिस प्रकार मनुष्य को श्री भगवान की उपासना करना अनिवार्य है उससे कहीं अधिक स्त्री को है। जब तक दोनों की प्रकृति एकसी न होगी तब तक घर के किसी भी छोटे बड़े को किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। इसलिये गृहस्थाश्रम में स्त्री की सहायता और बुद्धिमानी से गृहचर्या सुचारु रूप से चल सकती है। अतः पति पत्नी दोनों को ईश्वरोपासना करना अनिवार्य है।

६–सती नारी स्वप्न में भी अपने पति का अनिष्ट नहीं चाहती वह सदैव अपने पति के मंगल कामना की हार्दिक इच्छुक रहती है।

७–जब पति घर से जाने लगे तो जिस काम के लिये वह जाने लगे, मुस्कराते हुये, भाव व प्रेम के साथ, उसको उत्साह दिलाते रहना चाहिये।

८–सास और जेठानी, देवरानी इत्यादि को अपने प्रेम की पात्र बनाने के लिये उनके छोटे छोटे बच्चों को प्रेम सहित सेवा करके उनको प्रसन्न रखना चाहिये।

९–कन्याओं को अपने पारिवारिक भाइयों को छोड़कर अन्य व्यक्तियों को अपनाना न चाहिये। माता पिता और परिवार वालों को चाहिये कि वे सदैव दृढ़ता के साथ अपनी कन्या को सुरक्षित रक्खें।

D. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

उन्नीसवां पाठ (१९)

१-घर में यदि किसी से भूल चूक हो जाय तो उसको एकांत में बुलाकर प्रेमभाव से समझा देना चाहिये। घर के सदस्यों के सामने, उसके दोष को बताकर लानत मलामत करने से कलह और लड़ाई झगड़े की नौबत आ जाती है, गलती करने वाला भी बेशर्म होकर और अधिक गलतियां करने लगता है।

२-अपने घर आये हुये शत्रु का भी निरादर न करो, किन्तु प्रेम व नम्रतापूर्वक प्रिय शब्दों द्वारा अभिवादन करके अपनी सभ्यता का परिचय देना चाहिए

३-रिश्तेदारी व मैत्रीपूर्ण घरों में जाने से पहिले बच्चों के लिये कुछ फल या मिठाई वगैरह साथ लेकर वहां जाना चाहिये।

४-अपने वृद्ध गुरू और पूज्यजनों को अपनी मौजूदगी में कोई बोझा इत्यादि लेकर न चलने दो। जहां तक सम्भव हो उनका बोझा स्वयं उठा लेना चाहिये या अन्य किसी के द्वारा उनका सामान उठवा देना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-अपने घर आये हुये बुजुर्गों तथा अन्य पुरुषों के जाते समय कुछ दूर तक पहुंचा कर नमस्कार या प्रणाम करते हुये वापिस होना चाहिये। अपने घर आये हुये व्यक्ति से अवश्य उसकी बातें सुनने का समय देना चाहिये। यदि आवश्यकीय कार्य के कारण समय न हो तो प्रेमपूर्वक उनसे क्षमा मांगते हुये दूसरा समय बता देना चाहिये।

६-घर के वृद्ध जनों को चाहिये कि पारिवारिक वातावरण की देखरेख करते रहें। और अपने अनुभव के द्वारा, सदस्यों को प्रेम के साथ, जो कठिनाइयाँ उनको पड़ी हों और उनसे उनको बचाने के जो साधन प्राप्त हुये हों, सहानुभूतिपूर्ण उन्हें समझाते रहना चाहिये।

७-दान पाने के अधिकारी केवल निर्धन, अपाहिज असहाय वृद्ध, सन्यासी और निर्धन विद्यार्थी ही हैं। यही सुपात्र हैं। कुपात्र को दान देने से दान देने वाला और दान पाने वाला दोनों पाप के भागी होते हैं।

८-मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर एवं राष्ट्रीय, धार्मिक स्थानों पर जब वहां होकर निकलें तो उनको सत्कार एवं नम्रतापूर्वक प्रणाम करना चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

उन्नीसवां पाठ (१९)

१–स्त्रियों को गैर मनुष्यों के साथ अनावश्यक सम्पर्क स्थापित नहीं करना चाहिये। हाव–भाव, चटक–मटक और अश्लील हँसी मजाक भरे शब्दों का प्रयोग करने से स्त्री निर्लज्ज कहलाती है। ऐसा होने से महिलाओं के सतीत्व के प्रति संदेह उत्पन्न हो जाता है।

२–पुरुषों की दृष्टि पड़ने वाले स्थानों में स्त्रियों का शृङ्गार करना, बाल सँवारना, मांग भरना, आभूषण पहनना, काजल लगाना घोर असभ्यता और निर्लज्जता है।

३–घर को और बच्चों को साफ व स्वस्थ रखना चाहिये। घर के वृद्धों की सेवा व सत्कार पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

४–घर में जेठानी, देवरानी, नन्द इत्यादि के बच्चों को अपने बच्चों के समान प्यार करना चाहिये। जो स्त्रियां अपना पेट और सीना ढके बिना, स्वतंत्रता के साथ बिना घूंघट काढ़े घूमती हैं, वे अपनी मर्यादा खोकर घरवालों को बदनाम करती हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

 Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-जो स्त्रियां बिना पूछे बक बक किया करती हैं और अपनी शेखी बघारा करती हैं, वे निन्दनीय हैं।

६-स्त्रियों को गृहस्थी का काम जी लगाकर भाव व प्रेम के साथ करते रहना चाहिये। खाली समय में किसी के पास बैठकर या बुलाकर गप्पें उड़ाना, दूसरों की चुगली करना, एक दूसरे को लड़ाने का प्रयत्न करना तथा अपने परिवार वालों का भेद बताना दुराचारिणी स्त्री का काम है।

७-रास्ते में मिलते हुये अनेक गुण्डे व बदमाश लोग अश्लील बातें बककर स्त्रियों को देखकर चिढ़ाने की कोशिश करते हैं, स्त्रियों को चाहिये कि उनकी बातों को अनसुनी करके अपने पति के ध्यान में या मन से राम-राम करते हुये अपनी स्वयं ही रक्षा करती रहें।

८-पति-पत्नी को चाहिये कि घर के बच्चों तथा अन्य स्त्री, पुरुषों के सामने प्रेमयुक्त हंसी मजाक की बातें न करें।

९-स्त्रियों को चाहिये कि वे अपने पति व महात्माओं व देवताओं की फोटो यानी तस्वीर ही अपने कमरे में रखें, अन्य किसी की फोटो रखना उचित नहीं है।

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

बीसवां पाठ (२०)

१–किसी भी अत्याचारी एवं दुष्ट व्यक्ति से उसके सुधार के लिये अथवा औरों को उसके अत्याचारों से बचाने के लिये ईश्वर से उसकी सुमति और शुद्धि के लिये नित्य-प्रति प्रार्थना करने से शनैः शनैः वह दुराचार से सदाचार मार्ग की ओर अग्रसर होता जाता है।

२–व्यवहार में सत्य और प्रिय शब्दों का प्रयोग करने के लिए किसी मंत्रजाप, ध्यान अथवा किसी अभ्यास का साधन प्रतिदिन नियत समय पर तथा निश्चित समय तक करना आवश्यकीय है।

३–घर की प्रत्येक वस्तु को साफ व सुथरी तथा ठीक-ठीक स्थान पर रखना चाहिए और सब घर वालों को ऐसा ही करने के लिए प्रेमभाव से आदेश करते रहना चाहिए।

४–अपने प्रति दूसरों से भूल-चूक हो जाने पर उन्हें प्रेम की दृष्टि से क्षमा और उनके भविष्य के यथार्थ कल्याण के लिये ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करें।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-स्वयं भूल-चूक तथा अनुचित व्यवहार होने पर शीघ्र से शीघ्र समय मिलने पर एकांत में बैठकर गायत्री या राम-नाम मन्त्र अथवा जिसका जो अभ्यास हो उसके द्वारा तुरन्त प्रायश्चित करे और भविष्य में ऐसी भूल-चूक न होने के लिए ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करके जिसके प्रति भूल-चूक तथा अनुचित व्यवहार हुआ हो, उससे करुणामय नम्रतापूर्वक क्षमा मांगे।

६-घर में शुद्ध वायुमंडल रखने के लिये छोटे-बड़े नौकर-चाकर सबको सेवा भाव से यथायोग्य प्रेम और नम्रता के साथ उदारता का बर्ताव करना चाहिये।

७-अतिथि की यथायोग्य सेवा तथा सत्कार प्रेम और नम्रता के साथ करना चाहिये।

८-सन्तों की वाणी तथा उनका आदर्श जीवन-चरित अभ्यास साधन में लाभकारी है।

९-संसारी पुरुषों को आत्मोन्नति तथा ईश्वर भक्ति में लगा देना बहुत बड़ी सेवा है।

). Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

बीसवाँ पाठ (२०)

१–नग्न स्त्री-पुरुषों के चित्र न अपने पास रखना चाहिए न अपने मकान के किसी कमरे में रखना चाहिये। ऐसा होने से घर के सभी व्यक्तियों पर बुरा असर पड़ता है। अतः घर की मर्यादा रखने के लिए इसकी कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।

२–स्त्रियों को अन्दर घुटन्ना पहन कर ही धोती या साड़ी पहनना चाहिए। कभी–कभी गिरजाने अथवा हवा के तेज झोंकों से शरीर नंगा हो जाया करता है। जो महान असभ्यता तथा निन्दनीय है।

३–जो स्त्री अपने पति को आदर से नहीं देखती, और प्रियबाणी कहने के बजाय उससे बक-बक करती है, वह जीते जी कौवे की योनि के समान ही अपना जन्म व्यतीत करती हैं।

४–जो स्त्री अपने पति की गुप्त बातों को प्रकट करती है, वह अपने पति के तेज, आयु और बल का हनन करती है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–जो स्त्रियां अपने पति के भय के कारण अपने सास–ससुर, जेठ, देवर नन्द इत्यादि की दिखावटी सेवा करती हैं, किन्तु हृदय में कुढ़ती रहती हैं, वह अपने पति की कीर्ति का हनन करते हुये स्वयं को भी सद्मार्ग से गिराती हैं।

६–जो स्त्रियां अपने पति के गृह में आने के पश्चात् अपने ही मां बाप की कीर्ति की शेखी बघारती हैं और अपने ससुराल वालों के सदाचार का ध्यान न देते हुये अपने ही माता-पिता के कुल के रीति रिवाजों पर ही चलना पसंद करती हैं, वह अपने ससुराल वालों के प्रेम की पात्र कदापि नहीं हो सकतीं। स्त्री को अपने ससुराल वालों के पर्यावरण में ही ढल जाना चाहिये।

७–स्त्री का धर्म है कि जो भोजन पति के लिये पौष्टिक एवं रुचिकर हो, वही भोजन, भाव और प्रेम के साथ समय पर तैयार करके खिलाये।

८–पतिव्रता को चाहिये कि नित्यप्रति अपने पति के चरणोदक का भाव व प्रेम सहित पान करे। ऐसा करने से वह अमृत–पान करते हुये पति के प्रेम की पात्र बन जाती है।

D. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

इक्कीसवाँ पाठ (२१)

१–निष्काम और प्रेमभाव से बिना किसी भेदभाव व पक्षपात के किसी भी प्राणी की सेवा करना ईश्वर की सेवा करना है।

२–यत्र नार्यस्तु पूजयते, तत्र रमन्ते देवता' पति का भी यह कर्तव्य है कि वह पत्नी की उचित सलाह पर ध्यान दे और उसे प्रेम व सहानुभूति के साथ समझाने की चेष्टा करे। क्योंकि स्त्री व पुरुष दोनों परिवार रूपी गाड़ी के दो पहियों के समान हैं, जब तक दोनों में एकत्व नहीं होगा, तब तक परिवार का संचालन ठीक प्रकार से नहीं हो सकता।

३–पति को भी चाहिये कि वह पत्नी की छोटी-छोटी गलतियों का बखान परिवार के अन्य सदस्य के संमुख न करे।

४–पति को स्वयं उस प्रकार के व्यवहार से पत्नी को प्रभावित करना चाहिये, कि जिससे वह स्वयं ससुराल के सम्बन्धियों की सेवा हृदय से, मन लगाकर करे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–पति को भी अपनी पत्नी के मायके वालों की कभी आलोचना नहीं करनी चाहिये। साथ ही स्त्री के हृदय में प्रेम के साथ यह बात बिठा देनी चाहिये कि स्त्री की ससुराल उसका वास्तविक घर है। जब उसके हृदय में यह बात दृढ़ता के साथ बैठ जायेगी, तो वह स्वयं ही ससुराल के वातावरण में ढलती चली जाएगी और ससुराल की मानमर्यादा को अपनी मान मर्यादा समझने लगेगी।

६–पति को चाहिये कि प्रेम के साथ वह स्त्री को अपनी रुचियों से परिचित करावे।

७–पति को चाहिये कि वह पत्नी के प्रेम व भक्ति का सम्मान करे। मानसिक रूप से उसके प्रेम को ठेस न लगने दे।

८–पति का धर्म है कि वह पत्नी की विचारधारा को अपनी विचारधारा के अनुकूल ढालने का प्रयत्न करे, जिससे उसे अपने और पति के विचारों में विरोध न जान पड़े।

९–पति को भी जहां तक संभव हो सके पत्नी की रुचि को पूरा करा देना चाहिये। ताकि घर का वातावरण सुख व शांतिमय बना रह सके।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

इक्कीसवां पाठ (२१)

१–पत्नी को चाहिये कि पति से कभी हठ न करें। यदि रुचि के अनुकूल कोई बात न भी हो सके तो भी कभी किसी प्रकार का द्वेष, मन में न आने दे। उसकी सेवा में भी कमी न होने देवे।

२–यदि पति सो रहा हो, तो यथा संभव उसको जगाना न चाहिये। विशेष परिस्थितियों में बहुत ही सावधानी के साथ इस प्रकार जगाया जावे कि उसके मस्तिष्क पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े।

३–पत्नी का धर्म है कि जब तक पति प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा न देवे, अपने मायके न जावे। यदि कारणवश पति आज्ञा न देवे तो मन मुटाव न करे और न कभी जाने का हठ करे।

४–जिसके पास सदाचारिणी धर्मपत्नी है, उसके पितृगणों का उद्धार हो जाता है, तथा वह संसार में माननीय व पूज्य है। सदाचारिणी स्त्री के द्वारा उसकी माता की कोख पवित्र हो जाती है तथा पिता जीवनमुक्त हो जाता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

 Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–पत्नी का धर्म है कि पति से किसी भी प्रकार का कोई वाद-विवाद न करे, किन्तु नम्रता पूर्वक प्रिय शब्दों में अपने सुविचार प्रकट कर दे।

६–पत्नी का धर्म है कि वह सदैव अपने पति के पास रहने की लालसा रखे। वह अपने पति को देखकर बड़े यत्न से भक्तिभाव पूर्वक उसकी ओर निहारते हुये सदैव प्रसन्न रहे।

७–सदाचारिणी स्त्री अपने पति के सो जाने के बाद उसकी सेवा करते हुये सो जाती है। और पति के जागने के पहले उठकर उसके दैनिक कर्मों से निवृत होने के लिये आवश्यक सामग्री उचित स्थान पर पहले से ही तैयार कर देती है।

८–पत्नी के लिये पति ही ब्रह्मा, पति ही विष्णु पति ही महेश्वर है। अतः पत्नी यदि किसी अन्य देवता की पूजा करती है, तो वह अपने धर्म का पालन नहीं करती। पति ही उसका साकार और निराकार ब्रह्म है।

९–सदाचारिणी स्त्री अपने पति की सेवा करने से तीर्थ स्नान का फल तथा सारी तपस्याओं और व्रतों का फल पाती है।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

बाईसवां पाठ (२२)

१–पति का धर्म है कि वह स्त्री को बातों पर उस प्रकार विचार करे, जैसे एक समझदार राजा अपने मंत्री की बातों पर विचार करता है। और किसी बात को न मानने का कारण प्रेम के साथ समझादे।

२–पति को भी स्त्री को सुख सुविधाओं का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। ताकि घर का वातावरण सुख व शांतिमय बना रह सके।

३–पति का परम धर्म है कि वह अपने व्यवहारों से पत्नी को इतना प्रभावित करले कि पत्नी कभी अपने पति के सिवा अन्य कहीं जाने की इच्छा न रखे, चाहे वहां उसको पति से भी अधिक कोई सुख देवे।

४–सर्वप्रथम पति को अपने आचरण शुद्ध करने की आवश्यकता है, स्त्री स्वयं उसका अनुकरण करने लगेगी।

५–पुरुष सदाचारी वह है जो केवल अपनी पत्नी के द्वारा की गई सेवा में प्रसन्न रहता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६-पति के लिये स्त्री धर्म कार्यों में सहधर्मिणी, भोजन कराते समय माता, काम पुरुषार्थ की प्राप्ति के समय पत्नी तथा किसी समस्या के समाधान के समय एक कुशल मंत्राणी का कार्य करती है। अतः उसकी दृष्टि में किसी अन्य स्त्री के प्रति वह भाव नहीं होना चाहिये, जो अपनी पत्नी के प्रति होना चाहिये। पर स्त्री का ध्यान करने वाला पुरुष अपने धर्म से गिर जाता है। उसका प्रेम पत्नी के प्रति अनन्य होना चाहिये।

७-सदाचारी पुरुष स्त्री को सम्पूर्ण आठ गुणी शक्तियों का सदुपयोग करके अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति करती है।

८-पति को व्यवहारिक रूप से अपना आचरण पत्नी के सामने ऐसा रखना चाहिये और अपने पूजनीयों का सम्मान व सेवा इस प्रकार करनी चाहिये कि पत्नी स्वयं इसकी रूचि के अनुसार परिवार के पूजनीयों की सेवा में रत रहे। और घर के अन्य लोगों के प्रेम की बात बनी रहे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

बाईसवां पाठ (२२)

१–गृहणी का धर्म है कि प्रातःकाल इतनी शीघ्रता से उठे कि शौचादि से निवृत होकर अपने घर में झाड़ू लगावे, बिछौने इत्यादि ठीक स्थान पर रखे तथा गृहस्थी के सारे कार्य कुशलता पूर्वक करते हुये पति के पूजनीयों को यथाविधि, पति की रुचि के अनुसार सेवा सुश्रूषा करे।

२–माताओं का धर्म है कि वे अपनी पुत्रियों तथा पुत्रों की ओर से सावधान रहते हुए देखते रहें कि उनमें त्रुटियां न पड़ने पावें। उनके सदाचार एवं ब्रह्मचर्य की खास तौर पर कड़ी निगरानी रखें।

३–प्रारम्भ ही से बच्चों को घर में सब पूज्यनीयों को नम्रता पूर्वक चरण स्पर्श अथवा प्रणाम करने की आदत डालते रहना चाहिये।

४–बच्चों के साथ जो खेलने वाले या पढ़ने वाले लड़के हों उनका भी चालचलन जानते रहना चाहिये क्योंकि दुराचारी लड़कों के साथ ही अच्छे लड़के भी कुसंगत में पड़कर बिगड़ जाते हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-बच्चों को सदाचारी बनाने का साधन करते रहना ईश्वर के बाललीला को सगुण रूप में पूजा करना है।

६-आजकल प्रायः लड़कियां उच्च शिक्षा नौकरी करने के लिये प्राप्त करती हैं परन्तु वे समय न मिलने के कारण बच्चों को सदाचार की शिक्षा नहीं दे पातीं। सब काम नौकरों पर छोड़ दिया जाता है। अतः ऐसी स्त्री को बच्चों को सुधारने और योग्य बनाने की जिम्मेदारी से अलग होना अपने कर्तव्य पालन से वंचित होना है।

७-प्रथम श्रेणी के मनुष्यों को छोड़कर मध्यम श्रेणी के नर नारी अपनी आमदनी कम और खर्च ज्यादा होने के कारण चिंतित रहते हैं। यह कठिनाइयां स्त्री और पति के पूर्ण सहयोग होने से ही बहुत कुछ दूर हो सकती हैं।

८-पति की त्रुटियां हटाने की जिम्मेदारी पत्नी की है और पत्नी की त्रुटियां हटाने की जिम्मेदारी पति की है। यदि दोनों एक साथ बैठकर निश्चित समय पर ईश्वर से त्रुटियों के हटाने की प्रार्थना करेंगे तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

तेईसवाँ पाठ (२३)

१–पति-पत्नी का, अन्य सभी सम्बन्धियों की अपेक्षाकृत अधिक सम्बन्ध रहता है। अतः एक दूसरे के मानसिक विचारों का लेन-देन रहता है। एक-दूसरे के गुणों व दोषों का भी आपस में आदान-प्रदान होता रहता है।

२–यदि मनुष्य यथार्थ में स्त्रीव्रता है तो उसकी स्त्री अवश्य पतिव्रता होगी। यदि मनुष्य स्वयं ही दुराचारी है तो उसकी स्त्री अपने पिता के यहाँ भले ही सदाचारिणी रही हो परन्तु दुराचारी पति के प्रभाव से सदाचारिणी स्त्री भी दुराचारिणी हो जावेगी।

३–जो मनुष्य किसी की कन्या, बहन, माता को बुरी दृष्टि से देखेगा उसकी पुत्री, बहन और माता भी बुरी दृष्टि से देखी जावेगी। अतः मनुष्य को यह शब्द अपने हृदय में अंकित करके मन-वचन, कर्म से किसी भी श्रेणी की स्त्री को क्रमशः अपनी पुत्री, बहन और माता के समान समझ कर मन से एवं वचनों और कार्यों से साधना करते रहना चाहिये। ऐसी साधना ईश्वर की उपासना बिना कदापि संभव नहीं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–जो मनुष्य अपने घर के प्रत्येक प्राणी को सदाचारी बनाना चाहता हो उसका विशेष तथा महान कर्त्तव्य है कि वह स्वयं ही सदाचारीव्रत का पालन करता जावे। उसके सदाचाररूपी प्रकाश से घर के अन्य प्राणी भी स्वतः ही सदाचारी बनते जावेंगे। सदाचार की प्राप्ति ईश्वरीय कानून की पाबन्दी करने से होती है।

५–सदाचार की वृद्धि के लिये बालकों को आर्थिक तथा धार्मिक शिक्षा के साथ ही साथ ब्रह्मचर्य तथा सदाचार का विशेष महत्व देते रहना चाहिये।

६–प्रत्येक गृह स्वामी व गृह स्वामिनी का धर्म है कि वह घर के प्रत्येक युवा, स्त्री और पुरुष कन्याओं, बहनों और पुत्र-वधुओं की गुप्त रूप से ठीक ठीक जांच-पड़ताल दक्षता के साथ करते रहें कि वह स्वयं असदाचारिणी न होकर दूसरों को चरित्रहीन न बनाने पावें।

७–आजकल प्रायः घर-घर में द्वेष, कलह और हाय-हाय मची हुई है। एक-दूसरे को उन्नति करते हुये नहीं देख सकते जिसके कारण किसी के जीवन में सुख और शांति नहीं है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महिला सभ्यता और सदाचार

तेईसवां पाठ (२३)

१–प्रार्थना हृदय के शब्दों से ऐसी हो कि उसको प्रार्थना करने वाला और प्रार्थना करने वाले का इष्टदेव ही सुन सके।

२–पश्चाताप के साथ प्रार्थना करने से हृदय शुद्ध हो जाता है और भविष्य में गलतियां नहीं होने पाती हैं।

३–आजकल लोगों को धोखा देने के लिये बहुत से लोग साधू का भेष बनाकर अच्छे घरानों की स्त्रियों को भी अपनी बातों में फंसाकर जेवर या नगदी इत्यादि ठग कर ले जाते हैं। स्त्रियों को कोई भी ऐसा काम बिना अपने पति के मौजूदगी के नहीं करना चाहिये।

४–स्त्री का धर्म है कि उसके पति को खान पान में जो चीजें पसन्द न हों, वह स्वयं ही, प्रसन्नता के साथ, उनको त्याग करदे। दोनों को एक रुचि के होने में ही सच्ची मित्रता कही जा सकती है और दोनों का जीवन शांतिमय व्यतीत होता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-मनुष्य अपनी पत्नी को पतिव्रता देखना चाहता है, उसी प्रकार स्त्री भी अपने पति को स्त्रीव्रता देखना चाहती है। जब तक ऐसा न होगा, स्त्री और पति में पवित्र प्रेम कदापि संभव नहीं।

६-यदि मनुष्य किसी स्त्री को बुरी दृष्टि से देखेगा तो उसकी स्त्री भी निश्चय किसी व्यक्ति के द्वारा देखी जायगी।

७-जो व्यक्ति किसी लड़की, बहन, माता, बहू इत्यादि को बुरी दृष्टि के देखेगा, उसकी लड़की, बहन माता, बहू इत्यादि भी बुरी दृष्टि से देखी जायेंगी।

८-यदि पत्नी मनक्रम बचन से पातिव्रत धर्म के व्रत का भाव और प्रेम के साथ पालन करेगी तो उसके इस व्रत का प्रभाव उसके पति पर ऐसा पड़ेगा कि वह भी अपने पति को स्त्रीव्रता पावेगी।

९-आजकल कुटनी स्त्रियों का भी बहुत फैलाव हो रहा है। वे एकांत का समय निकाल कर घर की बहू बेटियों को दुराचार की शिक्षा देकर अपना मतलब सीधा करती हैं। प्रत्येक गृहस्वामी एवं गृहणी का धर्म है कि अपने घर केवल जानी समझी ही स्त्रियां आने पावें। पति पत्नी दोनों को इसकी कड़ी निगरानी रखनी चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

चौबीसवां पाठ (२४)

१—नाना प्रकार के यत्न करने पर भी मनुष्य दैहिक, दैविक और भौतिक तापों, भयंकर आपत्तियों और कष्टों व दुःखों से छुटकारा नहीं पा रहे हैं। इसकी केवल एक ही औषधि है, वह है ईश्वर की शरणागति। ईश्वर की शरणागति संत की कृपा पर निर्भर है। संत की कृपा सत्संग पर निर्भर है।

२—प्रत्येक गृह-स्वामी व गृह-स्वामिनी का धर्म है कि घर में जितने स्त्री, पुरुष और बच्चे हों वे सब अपने २ पात्र और अधिकार के अनुसार ईश्वर-भक्ती का निश्चित समय पर तथा निश्चित समय तक साधन करते रहें। दिन में किसी समय घर के सब मनुष्य एकत्रित होकर एक जगह बैठकर ईश्वर का कीर्तन, प्रार्थना व भजन या जिसकी जो साधना हो, नित्यप्रति उसी प्रकार आवश्यकीय समझें जैसाकि भोजन करना और पानी पीना अनिवार्य है।

३—इस संसार में जितने विकार तथा दूषित कर्म दुराचार को बढ़ाने वाले हैं उनको शुद्ध करने के लिये सन्ध्योपासना से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-मन से कुवासनाओं को हटाकर उनके स्थान में सुबासनाओं को भेजते रहने का साधन करना आन्तरिक शुद्धता है। संग-द्वेष के कारण मन दूषित विचारों से भर जाता है। इसलिये मानसिक और शारीरिक कुसंग से सदैव बचते रहने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

५-दुष्ट प्रकृति के मनुष्यों के संग से मन में खोटे विचार उपजते हैं। कुवासनायें हृदय में वास करने लगती हैं जिसके कारण मनुष्य विषय भोग की ओर आकर्षित होने लगता है। चित्त में दूषित विचारों के चिन्तन के कारण अशांति रहती है और एक प्रकार की अग्नि सी जलती रहती है कि जिसमें शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक सम्पत्ति का हवन करना पड़ता है। दुष्टों का संग प्रत्येक दशा में दुःखदाई और हानिकारक है।

६-सत्संग की प्रेरणा से हमको ईश्वर के गुणों की महिमा प्रकट होती है। शनैः शनैः हमारा अन्तःकरण शुद्ध होता है। और हम भगवान की महिमा का जैसे २ अपने हृदय में अंकित करते जाते हैं, वे सब गुण हममें आने लगते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

चौबीसवां पाठ (२४)

१–एक दूसरे की देखा देखी ज्यादातर खर्च कपड़ों और फैशनेबल चीजों में होता है। यदि गृहिणी दक्ष हो तो खर्चे में बहुत बचत हो सकती है। इसमें पति और पत्नी का हार्दिक सहयोग बहुत आवश्यकीय है।

२–देवताओं की दी हुई वस्तु को जो सबसे प्रथम देवताओं के अर्पण नहीं करता है वह आत्म हत्यारे की गति को प्राप्त होता है। इसलिये पत्नी को सदैव सास ससुर की विशेष भाव और प्रेम सहित आज्ञा का पालन उन्हें देवतुल्य समझकर ही करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के द्वारा उसको पति की प्राप्ति हुई है।

३–पति पत्नी के बीच में सन्देह महान भयंकर दुर्घटना का कारण भी हो सकता है। अतः पति-पत्नी दोनों को सावधान रहते हुए सदाचार के व्रत का पालन करते रहना चाहिए ताकि बच्चे भी उनके पदचिन्हों पर चलते रहें।

४–सास ससुर तो बहू को शिक्षा देते रहते हैं, परन्तु पति को दृढ़ता के साथ देखते रहना चाहिए कि उसकी शिक्षा क्रियात्मक रूप में काम कर रही है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१–पति से अधिक सम्मान अपने सास-ससुर का करें क्योंकि सास–ससुर के द्वारा ही उसको पति की प्राप्ति हुई है।

२–यदि किसी कारण-वश सास, बहू को ताना देती है तो उसे यह याद रखते हुए कि उसे उत्तम वस्तु — 'पति' की प्राप्ति सास के द्वारा ही हुई है।

३—जिस प्रकार सास अपने पुत्र की शुभचिंतक रहती है, उससे कहीं अधिक बहू की शुभ चिंतक रहती है। अतः सास की आज्ञा का भाव और प्रेम सहित तबियत से विपरीत होते हुए भी पालन करना चाहिये।

४—माता का धर्म है कि बालपन ही से कन्या को ससुराल के व्यक्तियों से किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, इस प्रकार की शिक्षा देते रहना चाहिये कि सभी प्रकार से उसका पति तथा घर के अन्य संबंधी संतुष्ट व प्रसन्न रहें।

५–प्रायः मातायें अपनी कन्याओं को उच्च आदर्श की शिक्षा तो देतीं रहती हैं परन्तु घरेलू कामों की ओर ध्यान नहीं देतीं जिसके अभाव में बहू के माता-पिता की आलोचना होने का अवसर आ जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

पच्चीसवां पाठ (२५)

१-मनुष्यों को बहुत काल से सत्शिक्षा के प्राप्त न होने से वह अपने वर्णाश्रम धर्म के कर्त्तव्य पालन करना भूल गये हैं, कि जिसके कारण घर २ यथाविधि ईश्वर उपासना करने की प्रथा उठ गई है।

२-दुष्ट को संगति से मनुष्य दुष्ट बन जाता है। नीच पुरुष अपने ही तुल्य अपने साथी को नीच तथा दुराचारी बना डालता है। कुसंग में पड़ने से मनुष्य कुमार्ग का पथिक होकर शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शक्ति का नाश करके अधोगति को प्राप्त होता है।

३-प्रत्येक नर-नारी काधर्म है कि वे विकारों को शनैः शनैः नित्यप्रति दृढ संकल्प द्वारा दूर करते रहें। श्री भगवान की आराधना करने से सब प्रकार के विकारों से छुटकारा हो जाता है।

४-यदि मनुष्य ईश्वर भक्त तथा सदाचारी बनना चाहता हो तो उसे सत्संग का आश्रय लिये बिना सफलता कदापि सम्भव नहीं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–मन के विचारों का परिणाम शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। खोटे विचारों से मन में अशांति होती है। एक प्रकार की अग्नि जलती है जो शरीर का नाश कर देती है। स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

६–पवित्र विचारों से मन प्रसन्न रहता है। मन के प्रसन्न होने से शारीरिक स्वास्थ्य की वृद्धि होती है। अतएव सदा शुद्ध-पवित्र, भले विचारों से मन को पवित्र तथा शुद्ध रखना चाहिये।

७–सत्संग में सद्‌विचारों का फैलाव रहता है। वह दुराचारी मनुष्यों को सदाचारी बना देता है। अतः सत्संग की अमृत वर्षा से लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल बना लेना चाहिये।

८–सत्संग के प्रभाव से हम समय २ पर ईश्वर उपासना का साधन करने लगते हैं। ईश्वरोपासना में कोई कठिनाई नहीं है। इसलिए हमको संध्योपासना की ओर आकर्षित होना चाहिए।

९–जिसकी जो मातृभाषा हो या जिसको जो भाषा प्रिय हो उसको उसी भाषा को प्रयोग में लाते हुए सन्ध्योपासना करते रहना चाहिए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

पच्चीसवां पाठ (२५)

१–कन्या का विवाह होने के पश्चात वह माता पिता के वंश से अलग हो जाती है और पति का कुल ही उसका कुल हो जाता है। इसलिए ससुराल में पति के माता पिता तथा अन्य परिवार वालों को अपना ही समझना चाहिये और पात्रानुसार, धर्म के अनुसार, जो जैसी सेवा का अधिकारी हो पति की रुचि के अनुसार करते रहना चाहिये।

२–जिस घर में गृहस्वामी और गृहस्वामिनी भाव और प्रेम के साथ अपने इष्टदेव श्री भगवान की उपासना करते हैं, उस घर में ईश्वरीय सहायता अवश्य मिलती रहती है तथा घर का वायुमण्डल शुद्ध, पवित्र और आनन्दमय रहता है।

३–ब्रह्मचर्य का व्रत सब व्रतों में महान व्रत है। इस व्रत के महत्त्व को माता पिता ही अपनी संतान के हृदय में अंकित करा सकते हैं। अतः माता पिता को निःसंकोच होकर अपनी संतान को इस व्रत के पालन करने की दीक्षा देना अपना परम धर्म समझना चाहिये।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४--गृहस्वामी और गृहस्वामिनी का धर्म है कि सबसे प्रथम वे ब्रह्मचर्य व्रत की महिमा समझें और उससे उन्होंने जो लाभ और हानियां उठाई हैं उसको निःसंकोच अपने पुत्र और पुत्र बधुओं को समझा दें। और ब्रह्मचर्य व्रत का मर्यादा के साथ पालन करने की दीक्षा दें।

५--कुछ घरों में ऐसे भी नरनारी होते हैं कि आपस में कलह करा देना ही उनका काम है। किंचित-मात्र बात को भी बढ़ा चढ़ाकर कहते और सुनाते हैं कि बिना कारण ही घर में वैमनस्यता हो जाती है और आपस में बोलचाल भी बन्द हो जाता है। गृहस्वामी और गृहस्वामिनी को ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिये।

६--कन्या के विवाह होने के पश्चात जब वह पुत्र-वधू बन कर ससुराल आती है, तब उसके आचरणों का मूल्य उसके माता-माता के आचरणों से आंका जाता है।

७--प्रत्येक माता-पिता का धर्म है कि कन्या को ऐसी शिक्षा दें जिससे माता-पिता के कुल को कलंकित न करे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्तव्य-पालन और सदाचार

छब्बीसवाँ पाठ (२६)

१-सन्ध्या किसी विशेष मज़हब तथा मत से सम्बन्ध रखने वालों के लिए ही नहीं है, किन्तु ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाले सभी मज़हब, सम्प्रदाय, पंथ तथा मत के अनुयायियों के लिए नित्य प्रति समय समय पर धर्मानुसार करना आवश्यकीय है।

२-सन्ध्या की विधि सभी के लिए बहुत सरल व सुगम है। सन्ध्या विद्वान व मूर्ख एवं पढ़े और बिना पढ़े सभी वर्णों के नरनारी अपनी रुचि और भाव के अनुसार किसी भी स्थान तथा किसी भी दशा में निर्भयता के साथ नियमानुसार नित्यप्रति समय समय पर बिना संकोच के निरंतर कर सकते हैं।

३-सन्ध्या में श्री भगवान की स्तुति, प्रार्थना, व ध्यान करने का नित्य प्रति नियमानुसार अभ्यास करना है।

४-सन्ध्या शब्द का अर्थ प्रत्येक नर—नारी की प्रकृति तथा रुची और भाव के अनुसार बहुत सरल है। परब्रह्म परमात्मा का भली भांति (रुचि और भाव के अनुसार) ध्यान किया जाए जिसमें, वही सन्ध्या है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-स्तुति —श्री भगवान के पवित्र नामों और गुणों का स्मरण और कीर्तन करना। स्तुति करने से स्तुति करने वालों में ईश्वर के गुण शनैः शनैः आने लगते हैं।

६-सास ससुर की सेवा करने की दीक्षा पति ही उत्तम प्रकार से दे सकता है। अतः पति का धर्म है कि वह पत्नी को निरन्तर सेवा करनेका महत्व समझाता रहे।

७-पति को सावधानी के साथ अपनी पत्नी को घर के वातावरण को भली प्रकार से समझा देना चाहिए और जिसके प्रति जैसा व्यवहार करना चाहिए, भी समझा देना चाहिये ताकि गृहचर्या में उससे भूल चूक न हो जावे।

८-कही हुई और सुनी हुई बात का जब तक पूर्ण विश्वास न हो जावे तब तक स्वयं को भी निश्चय नहीं करना चाहिए। किसी बात को सुनते ही निर्णय लेनेमें भयंकर हानि भी हो जाने की सम्भावना रहती है।

९-अपने पुरुषार्थ का पूर्ण प्रयोग करने के पश्चात् कमी की पूर्ति के लिए श्री भगवान् से प्रार्थना करना उचित है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

छब्बीसवां पाठ (२६)

१-बहू यदि यथार्थ में सदाचारिणी है तो वह अपने शील स्वभाव से ससुराल के वातावरण को भी शुद्ध और पवित्र बना देती है।

२-सास यदि सदाचारिणी है तो वह बहू कैसी भी क्यों न हो, को सदाचारिणी बना देती है।

३-माता पिता का धर्म है कि अपनी पुत्री को पति का महत्व बताते हुए उसके सास-ससुर का महत्व भी भली भांति हृदय में अङ्कित करा देवे।

४-जिस बहू ने अपनी सास को सन्तुष्ट नहीं किया उसके भविष्य उज्ज्वल होने की आशा नहीं करनी चाहिए, और न पति ही यथार्थ में उससे सन्तुष्ट रह सकता है।

५-मां अपने लड़के से हाथ पैर की सेवा नहीं कराना चाहती। पुत्र-वधू द्वारा मां की सेवा पुत्र द्वारा की हुई सेवा समझी जाती है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६–भूल चूक तथा गलतियां सभी से होती हैं, प्रेम द्वारा भली भांति समझाने से उच्छृंखलता भी बहू में इस तरह से मिट जाती है जैसे कि जंगली गाय को घर में पालने से पहले तो वह उछलती-कूदती है परंतु शनैः शनैः प्रेम-भाव से वह इतनी झुक जाती है कि स्वामी की ओर सीधी-साधी दृष्टि से देखती है और खूंटे पर चरने के बाद स्वतः ही आकर खड़ी हो जाती है ।

७–समय समय पर कन्या के माता पिता को भी पता लगाते रहना चाहिए कि उनकी कन्या ससुराल वालों के यहां ठीक ठीक व्यवहार कर रही है । यदि कुछ त्रुटियां पाई जावें तो अपनी पुत्री को भविष्य के लिये सावधान करते रहना चाहिए ।

८–पुत्र और पुत्री की सदाचार की शिक्षा तथा उसका निरीक्षण करना श्री भगवान् की साकार पूजा करना है ।

९–सास का धर्म है कि जिस प्रकार उसने अपने पुत्र का लालन पालन किया है उससे कहीं अधिक बहू के सदाचार की वृद्धि के लिए साधन कराती रहे ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

सत्ताईसवां पाठ (२७)

१-जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसे वैसा ही आचरण भी करना चाहिए। जैसे कोई सुमति और सुबुद्धि की प्राप्ति के लिए श्री भगवान से प्रार्थना करता है, तो उसे चाहिए कि यथाशक्ति सुमति और सुबुद्धि की उन्नति का नित्यप्रति साधन भी करता रहे।

२-जिस प्रकार पुरुषार्थ करते हुए मनुष्य को सहायता तथा सहयोग और भी मनुष्य करने लगते हैं उसी प्रकार श्री भगवान पुरुषार्थी मनुष्य की गुप्त व प्रकट रूप में अवश्य सहायता करते हैं।

३-यदि कोई हाथ जोड़े किसी काम की सफलता के लिए श्री भगवान से प्रार्थना ही करता रहे परन्तु उस काम की सफलता के लिए प्रयत्न न करे तो सफलता नहीं मिल सकती।

४-बिना परिश्रम किये केवल हाथ जोड़ने से जैसे सांसारिक वस्तु नहीं मिल सकती उसी प्रकार बिना अभ्यास व साधना के आन्तरिक दिव्य शक्तियों का मिलना तो अत्यंत ही कठिन है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–यदि पत्नी कारण या अकारणवश सास ससुर, या घर के अन्य व्यक्ति की शिकायत करती है तो पति को उस समस्या की सत्यता की जानकारी करने के पश्चात् भाव व प्रेम के साथ शीघ्रसे शीघ्र निपटा देना चाहिए।

६–सास ससुर का धर्म है कि वे अपनी बहू को अपने लड़के की अर्धांगिनी समझते हुए उससे ऐसा ही प्रेम रखें कि जैसा अपने पुत्र से रखते हैं।

७–ईश्वर सर्व गुण सम्पन्न है। अतः भाव सहित नित्यप्रति श्री भगवान की स्तुति करनेसे श्री भगवान और स्तुति करने वाले में अटूट सम्बन्ध हो जाता है। और स्तुति करने वालों में ईश्वरीय गुणों का प्रवेश होने लगता है। अतः नित्यप्रति निश्चित समय पर ईश्वर की स्तुति अवश्य करते रहना चाहिए।

८–प्रार्थना—प्रार्थना का आशय धर्म-भावना और आदरपूर्वक ईश्वर से कुछ याचना करना है।

९–यथाशक्ति प्रयत्न तथा परिश्रम करने पर श्री भगवान् की कृपा से मनुष्य इच्छित वस्तु के प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

सत्ताईसवां पाठ (२७)

१—श्री भगवान की उपासना और प्रार्थना करने से सन्तान अवश्य ईश्वर भक्त और सदाचारी बन जाती है।

२—जो बहू अपनी सास की सेवा भाव व प्रेम सहित नहीं करती, समय आने पर उसकी बहू भी उसके साथ ऐसाही बर्ताव करेगी जैसा कि वह अपनी सास के साथ कर रही है। अतः बहू को बहुत साव-धानी के साथ अपने सदाचार का परिचय ससुराल वालों को देते रहना चाहिए।

३—सास वही उत्तम है जो अपनी बहू को अपनी कन्या से कम न समझे। प्रेम के द्वारा ही सास बहू को अपने घर के वातावरण में मिला सकती है।

४—माता पिता का कर्तव्य है कि कन्या के लिये वर और पुत्र के लिए पुत्र-वधू ऐसी ढूंढ़ें कि जिसमें एक दूसरे की प्रकृति मिलती जुलती हो और साथ ही साथ एक दूसरे के घर के वातावरण भी मिलते जुलते हों।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–गृहस्थ आश्रम में नर और नारी के सहयोग के बिना कोई भी काम चाहे स्वार्थमय हो या परमार्थ के लिए हो, सफल नहीं हो सकता ।

६–माता पिता का धर्म है कि विवाह के पहले पुत्र को इस योग्य बना दें कि विवाह के पश्चात् वह अपनी वधू को अपने माता पिता के वातावरण में मिला सके ।

७–माता पिता का धर्म है कि कन्या को बाल्यावस्था ही से सदाचार के सांचे में ऐसे ढालते जावें कि वह जब अपनी ससुराल पहुँचे तब वह ससुराल वालों के वातावरण व रीति–रिवाजों में ऐसी ढल जावे कि अपने पति तथा सास–ससुर और परिवार के सभी सदस्यों के हृदय में प्रेम की पात्र बन जावे ।

८–पति का भी धर्म है कि प्रेम और भाव के साथ स्त्री के सदाचार की रक्षा करते हुये उसको सेवा करने के महत्व को समझाता रहे ।

९–जिस तरह से पति ही स्त्री के लिए ईश्वर है उसी तरह स्त्री भी पति की शक्ति है । शक्ति का आभास करते हुये स्त्री को सब प्रकार से सन्तुष्ट रखना पति का कर्त्तव्य है ।

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

अट्ठाईसवां पाठ (२८)

१–श्री भगवान् सर्वशक्तिमान हैं इसलिए श्री भगवान से ऐसी प्रार्थना करना चाहिए जिसमें श्री भगवान की ही प्राप्ति हो।

२–भाव सहित नित्यप्रति निश्चित समय पर प्रत्येक नर-नारी को श्री भगवान से प्रार्थना अवश्य करते रहना चाहिए।

३–किसी दूषित किये हुए काम का पश्चाताप करना और भविष्य में उस दूषित काम को न करने की प्रतिज्ञा करना ही सच्ची प्रार्थना है।

४–माता, पिता, विद्यागुरु, आचार्य व अन्य गुरुजन हमको बाहरी शिक्षा देते हैं और सांसारिक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देकर अपना कर्तव्य पूरा कर देते हैं।

५–भवसागर से पार होने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता है। सद्गुरु का परामर्श और आध्यात्मिक प्रकाश परम लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ होता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

 Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६–बाहर के गुरु अनेक विषयों पर उपदेश देते हैं परन्तु सद्‌गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

७–बाहर के गुरु का ज्ञान बाहरी वस्तुओं तक सीमित रहता है। उनके उपदेश से शंका उत्पन्न होने पर यथार्थ समाधान होना भी संभव नहीं है।

८--सद्‌गुरु का वास हमारे अन्तःकरण में सगुण रूप से विराजमान रहता है। उनके प्रकाश से काम, क्रोध, मोह, लोभ रूपी अंधकार उसी तरह से अंतःकरण से भाग जाते हैं कि जैसे दिन के प्रकाश में चमगादड़ व उल्लू भाग जाते हैं।

९--जिज्ञासु, साधु, संत तो पहचान में आ भी जाते हैं किन्तु सद्‌गुरु की पहचान ऐसी है कि वह परख में नहीं आता।

१०--सद्‌गुरु का कोई भेषभूषा नहीं होता। वह जन-साधारण की भांति रहते हैं। बाहर से ऐसा प्रतीत होता है मानो संसार में फंसा हुआ है परन्तु वह कर्तव्य पालन इस प्रकार से करता है जैसे कि कमल के पत्ते पर पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

अट्ठाईसवां पाठ (२८)

१—माता को पुत्र जन्म होने की जितनी प्रसन्नता होती है उससे कहीं अधिक पुत्र-वधू के प्राप्त होने की। अतः पुत्र-वधू का धर्म है कि वह अपने पति की माता को अपनी सेवा तथा सदाचार से हर प्रकार से संतुष्ट रखे।

२-घर में गुरुजनों का धर्म है कि पुत्र एवं पुत्र वधू को ऐसी शिक्षा देते रहें कि दोनों में शुद्ध व पवित्र प्रेम दिन प्रतिदिन बढ़ता जाये।

३-पति का धर्म है कि अपनी पत्नी को अपने माता पिता की सेवा स्मरण कराते हुए तथा उनको योग्य बनाने में जो उन्होंने कष्ट उठाये हैं उसे परिचित कराते रहें और पत्नी को ऐसी प्रेरणा दें कि पत्नी पति के माता-पिता से उतना ही स्नेह करने लगे जितना कि वह अपने माता-पिता से प्रेम करती रही है।

४ स्त्री का धर्म है कि वह अपने पति के सदाचार की भी सेवा रूप में रक्षा करती रहे।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५–पति का भी धर्म है कि अपनी पत्नी के माता-पिता का भी अपने ही माता पिता के समान आदर व सत्कार करे और उनकी आज्ञा का पालन उसी भांति करे कि जिस प्रकार अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करता है।

६–पति चाहता है कि मेरी पत्नी मेरे भाई बहिनों तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ वैसा ही प्रेम करे जैसा कि वह अपने घर वालों के साथ करता है। ऐसा होने के लिए पति का भी धर्म है कि वह अपनी पत्नी के घर वालों से भी वैसा ही प्रेम करे जैसाकि वह अपने घर वालों से करता है।

७-स्त्री पति की अर्द्धांगिनी है तथा पति स्त्री का अर्द्ध अङ्ग है, बिना एक दूसरे के अधूरे हैं। अतः नित्यप्रति पति पत्नी दोनों का मन, वचन, कर्म से एक हो जाने से ही कर्तव्य पालन हो सकता है।

८–पति का धर्म है कि ईश्वर-भक्ति एवं सदाचार की वृद्धि के लिए नित्यप्रति निश्चित समय पर ईश्वर की उपासना अवश्य करता रहे और साथ स्त्री को भी ईश्वर की उपासना में लगाता रहे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य पालन और सदाचार

उनतीसवाँ पाठ (२९)

१–सद्गुरु कोई चमत्कार नहीं दिखाता है। संसार के मनुष्य यदि उनके सामने सांसारिक इच्छायें रखते हैं तो वह उनकी इच्छाओं को पूरी करने के बजाय उन इच्छाओं को अपने आत्मबल द्वारा जड़मूल से नष्ट कर देता है।

२–कोई भी व्यक्ति किसी भी आपत्ति और मुसीबत में अपना दुखड़ा रोता है तो सद्गुरू उसको इतना आत्म–बल दे देता है कि वह अपने प्रारब्ध कर्मों को आसानी से भोगते हुये ईश्वरीय मार्ग से विचलित न होने पावे।

३–सद्गुरु का कार्य संसार से निकालने का है न कि उसको संसार में फंसाने का है।

४–कर्म और उसके फल का सिद्धांत अटल है। उसी के अनुसार प्रारब्ध बनता है कि जिसको भोगने के लिये मनुष्य जन्म लेकर आता है। सद्गुरु का काम आसानी से भोग चुकता करा देने का है, ब्याज पर ब्याज बढ़ाने का नहीं है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-ईश्वर की कृपा चार भागों में विभाजित है— (१) निज कृपा, (२) ईश्वर कृपा, (३) संत कृपा, (४) सद्गुरु कृपा।

६—सतसंग द्वारा जब जिज्ञासु को संत से मिलने की उत्कंठा हो जाती है तब उसको निज कृपा कहते हैं।

७-ईश्वर कृपा यह है कि वह जिज्ञासु को किसी संत के पास भेज देता है।

८—संत कृपा यह है कि वह जिज्ञासु को आध्यात्मिक सतसंग का अधिकारी बना कर सद्गुरु के मिलने की उत्कंठा उत्पन्न करा देता है।

९-सद्गुरु कृपा—सद्गुरु की कृपा यह हैं कि वह जिज्ञासु के हृदय के अंधकार को दूर करके जैसा वह स्वयं हैं वैसा उसको बना देता है।

१०. जीवन के ध्येय को प्राप्त करने के लिये सद्-गुरु की प्राप्ति अनिवार्य है।

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

उनतीसवां पाठ (२९)

१–जिस घर में पति-पत्नी एक दूसरे को ईश्वर उपासना में प्रोत्साहन देते रहते हैं और समय समय पर दोनों ईश्वर प्राप्ति का अभ्यास और साधन करते रहते हैं, उस घर का वायु मंडल शुद्ध और पवित्र होता रहता है।

२–ईश्वर उपासना से स्त्री और पुरुष दोनों को सुमति और सुबुद्धि प्राप्त होती है और उनको प्रत्येक कार्य में ईश्वरी सहायता प्राप्त होती रहती है।

३–स्त्री का धर्म है कि गृहचर्या में वह अपनी योग्यता का परिचय देती रहे ताकि उसकी सेवा द्वारा घर के सभी सदस्य प्रसन्न रहें।

४–स्त्री का धर्म है कि पति को अपना विश्वास पात्र बनाती जाने का साधन करती रहे। जैसे जैसे स्त्री पति की विश्वासपात्र बनती जावेगी, वैसे ही पति उसपर श्रद्धा व विश्वास करने लगेगा।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५-पति को अपनी स्त्री को भाव और प्रेम के साथ यह दीक्षा देते रहना चाहिये कि उसे अपने सास-ससुर से अपनी कठिनाइयों को इस प्रकार रखना चाहिए कि जिस तरह से अपने मायके में अपने माता-पिता के सामने रखती रही। सास-ससुर ऐसा सुनकर प्रसन्न होंगे और सहानुभूति के साथ उन कठिनाइयों को दूर करते रहेंगे।

६-पति का धर्म है कि जब तक स्त्री को अपना विश्वासपात्र न बना ले तब तक उसको अपने गुप्त भेद को कदापि न बताना चाहिये।

७-पति का धर्म है कि स्त्री को ऐसी शिक्षा देता रहे कि वह नित्यप्रति प्रातःकाल अपने सास-ससुर को भाव व प्रेम के साथ प्रणाम अथवा उनके चरण स्पर्श करती रहे। ऐसा करने से गृहचर्या के कामों में स्त्री को सफलता प्राप्त होती रहेगी।

८-घर के वातावरण को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी स्त्री के सदाचार पर निर्भर रहती है। सदाचारिणी स्त्री जिस घर में वास करती है उस घर में दिव्य शक्तियां वास करती हैं।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

कर्तव्य-पालन और सदाचार

तीसवां पाठ (३०)

५-संसार में प्राणी इच्छायें लेकर आता है और उसकी एक इच्छा पूरी होने के पहले ही दूसरी इच्छा पैदा होती रहती है। दूसरी इच्छा के पूरी होने तक तीसरी इच्छा उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार इच्छाओं का क्रमशः तांता बढ़ता जाता है और मनुष्य आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है।

२-कहा गया है कि गुरू कीजिये जान और पानी पीजिये छान। साधारण तौर पर गुरू की पहचान जिज्ञासु के जांच में आना असंभव नहीं तो बहुत कठिन अवश्य है।

३-बाहरी तौर पर गुरु की पहचान के लिए यह हो सकता है कि जो व्यक्ति जहां पर पैदा हुआ है, जहां पर उसने विद्या पायी है, अपने जीवन में उसने जो भी पेशा किया है, उन सब अवस्थाओं में उसके सदाचार व ईमानदारी में लोगों ने उसको किस हद तक आलोचना और प्रशंसा की हैं।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४-जिसमें स्वार्थ न हो, अहंकार न हो, जो प्रेमी हो, परोपकारी हो, सदाचारी हो और साथ हो साथ ईश्वर भक्त भी हो। यदि ऐसा व्यक्ति संत कृपा से मिल जावे तो उसी को अपने आप को समर्पण कर देना चाहिये।

५-शास्त्रों और धार्मिक ग्रथों के अध्ययन में चाहे जीवन व्यतीत कर दिया जावे, परन्तु परम तत्व की प्राप्ति बिना सद्गुरु की कृपा से कदापि संभव नहीं।

६-माता-पिता जन्म देने के कारण पूजनीय हैं। विद्या गुरू विद्या देने के कारण पूजनीय है। और भी जितने गुरूजनों से हमें शिक्षा मिली है वे सब पूजनीय हैं परन्तु सद्गुरु स्वयं ही शिष्य की पूजा अपनी अन्तरात्मा से उसी प्रकार करता है जिस तरह से भक्त भगवान की पूजा करता है। सद्गुरु की प्रशंसा के लिए ढूंढने से भी शब्द नहीं मिलते।

७-सद्गुरु श्री भगवान की भक्ति को चारों तरफ से लुटाते रहते हैं। वे पात्र, सुपात्र नहीं देखते। उन्हीं के प्रताप से संसार टिका हुआ है।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ॐ

महिला सभ्यता और सदाचार

तीसवाँ पाठ (३०)

१–स्त्री का धर्म है कि खाना बनाते समय, खाना परोसते समय अपने हृदय में पतिदेव का ध्यान अथवा राम नाम मनसे अवश्य कहती रहा करे। ऐसा करने से भोजन पवित्र और शुद्ध हो जाता है और जो कोई ऐसे भोजन को करता है उसमें सतोगुण की वृद्धि होती है और ऐसा होने से घर का वायुमण्डल भी सुरक्षित रहता है।

२–घर में सास-ससुर का धर्म है कि अपनी पुत्र वधू को उसी प्रेम दृष्टि से देखें कि जिस प्रेम दृष्टि से वे अपने पुत्र को देखते हैं। ऐसा होने से पुत्रवधू भी उनको वैसा ही देखेगी जैसा कि जिस दृष्टि से वह अपने माता पिता को देखती रही।

३–सास-ससुर का धर्म है कि यदि पुत्र वधू से कोई भूल चूक हो जावे तो प्रेम और भाव के साथ उस गलती को समझाते रहें और साथ ही साथ ईश्वर से प्रार्थना भी करते रहें कि वे त्रुटियां जो बहू में हैं दूर हो जावें।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४–बहू का धर्म है कि यदि कारण या अकारण-वश यदि उसकी सास चेतावनी के रूप में उसको ताड़ना दे तो उससे नम्रतापूर्वक अपनी गलती को स्वीकार कर लेवे और कह देवे कि हे माताजी, मेरी गलती को क्षमा कर दीजिये और मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि भविष्य में ऐसी गलती न होवे।

५–बहू का धर्म है कि अपनी सास की विश्वास पात्र बनने के लिए कोई ऐसी बात न छिपावे कि जिसके मालूम होने पर सास को बुरा लगे।

६–सास का भी धर्म है कि बहू में यदि कोई त्रुटियां हों तो घर के किसी भी व्यक्ति के सामने उसकी त्रुटियों को न बतावे किन्तु एकांत में उसको स्नेहपूर्वक समझाती रहे।

७–प्रायः घर की अन्य स्त्रियां एवं बाहर की स्त्रियां घर का भेद लेने के लिए बहू की प्रशंसा करके घर के भेद की बातें पूछती हैं, ऐसा होने पर बहू को मौन रहना चाहिये और सास या पति को जैसी परिस्थिति हो बताते रहना चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर का तीर्थ

●

१—क्या बदल गया है,
दुनियां का कारखाना।
वह चीज है नुमायश,
शैदा है इक ज़माना।
पूजा नुमाइशी है,
सेवा नुमाइशी है।
ईश्वर के साथ छल है,
इस छल का क्या ठिकाना।
घर में हो घुप अन्धेरा,
मन्दिर में रोशनी हो।
ऐ मेरे दोस्त दारो,
ऐसा ग़जब न ढाना।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥
२—घर है तुम्हारा तीरथ,
सब तीर्थों से बढ़कर।
दुनियां का कोई तीरथ,
इसके नहीं बराबर।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रयाग और काशी,
गंगा है या कि जमुना।
सब हैं उसी के अन्दर,
कोई नहीं है बाहर।
मेरी सुनो अज़ीज़ो,
कहता हूं बात सच्ची।
गर यात्रा है करनी,
कीजे यहीं से उठकर।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥

३—यह धर्म की है भूमि,
याँ ध्यान का मज़ा है।
यहां जल है ऐसा निर्मल,
अस्नान का मज़ा है।
तुम यहां पढ़ो पढ़ाओ,
तुम यहां सुनो सुनाओ।
यहां शास्त्र का इरजां,
और ज्ञान का मज़ा है।
क्यों तीर्थों में तुम हो,
यों मारे मारे फिरते।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर कर्म की जगह है,
यहां दान का मज़ा है।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥

४—सब देवियां हैं इस्जां,
सब देवता है इस्जां।
जितने ऋषि मुनि हैं,
इनके मकां हैं इस्जां।
दर्शन जहां में जैसे,
ऐसे कहीं नहीं हैं।
है इष्टदेव इस्जां,
कुल देवियां हैं इस्जां।
मिलता है आदमी यां,
अधिकारियों से हरदम।
गर दान देना चाहो,
देश और शभा है इस्जां।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥

५—बूढ़े पिता को ईश्वर,
समझा करो तुम अपना।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वह शिव है और विष्णु,
बस एक वह है ब्रह्मा ।
वह राम की है,
और कृष्ण जी की सूरत ।
तुम जान और दिल से,
करना उसी की सेवा ।
सब देवताओं से,
वह बढ़कर है मर्तबे में ।
मन्दिर में जाओ पीछे,
पहिले हो उनकी पूजा ।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ॥

६—बूढ़ी तुम्हारी माता,
सब देवियों की देवी ।
बस दुरुस्त ही समझना,
सीता है राजरानी ।
बाहर से आओ घर में,
तो पांव उसके पूजो ।
जब जाओ घर से बाहर,
तो लो दुआयें उसकी ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूजा में सबसे बढ़कर,
माता का पूजना है।
जिसने कि उसको पूजा,
देवी उसी ने पूजी।
घर कर दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ॥

७—है विश्वदेव घर में,
बूढ़े बुजुर्ग सारे।
वह जान और दिल से,
तुमको रहे प्यारे।
घर में ऋषि बहुत हैं,
घर में मुनि बहुत हैं।
वह रिश्तेदार हैं,
और भाई बहिन तुम्हारे।
दर्शन करो तो उनके,
सेवा करो तो उनकी।
एहसान उनके किसने,
सर से भला उतारे।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ॥

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८—घर है तुम्हारा मन्दिर,
है उसमें लक्ष्मी भी।
आओ तुम्हें बता दूं,
बीवी है वह तुम्हारी।
ऐसा न काम करना,
जिससे वह हो नाखुश।
इज्जत से उसको रखना,
वह है महान देवी।
बातें करो तो मीठी,
बोलो तो उससे हंसकर।
यह घर की लक्ष्मी की,
पूजा बहुत है अच्छी।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥

९—घर की जो लड़कियां हैं,
वह देवियां हैं सारी।
और देवियां भी कैसी,
जान और दिल से प्यारी।
उनको चढ़ावे लाकर,
ऐ दोस्तो चढ़ाओ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कपड़े चढ़ाओ अच्छे,
गहने चढ़ाओ भारी ।
घर की जो देवियां हैं,
जब तक कि वह न खुश हों ।
बाहर की देवियां,
कब खुश हो सकें तुम्हारी ।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर का तुम जलाना ॥
१०–लड़के हैं जितने घर में,
वह सब बिहारी जी हैं ।
सब में अवधबिहारी,
मूरत कृष्ण की है ।
नाज उनके तुम उठाओ,
उनको सदा मनाओ ।
यह खुश अगर हैं तुमसे,
खुश देवता सभी हैं ।
मेले इन्हें दिखाओ,
जलसों में साथ लाओ ।
यह बृज और अवध से,
आवाजें आ रहीं हैं ।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ॥

११–तीरथ तुम्हारा घर है,
और सब ग़रीब भाई ।
तीरथ के हैं निवासी,
कुछ कीजिये भलाई ।
दान उनको खूब देना,
उनकी दुआयें लेना ।
हो खर्च दान में जो,
अच्छी है वह कमाई ।
जब ध्यान देके मैंने,
ऐ दोस्तो सुना है ।
बस यह सलाह है दिलकश,
है गोशजां में आई ।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ॥

१२—एहसान नौकरों पर,
और दोस्तों पर करना ।
दम महर और वफ़ा का,
लेलो निहार भरना ।

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सब भी ऐ अज़ीज़ो,
तीरथ के हैं निवासी।
इनको भी पूजना तुम,
तीरथ से जब गुजरना।
इनके के भी हक हैं तुम पर,
तुम दो इन्हें बराबर।
पण्डे तुम्हें डरायें,
तो भूलकर न डरना।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना॥

१३—समझो न उसको घर तुम,
तीरथ है या कि मन्दिर।
है वास देवियों का,
और देवताओं का घर।
अधिकारी और निवासी,
मिलते यहां बहुत हैं।
इस यात्रा से है कोई,
यात्रा न बढ़कर

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दर्शन के भी मजे हैं,
और दान के भी इस्जां ।
यह कौल महर का है,
तुम नक्श करलो दिल पर ।
घर का दिया जलाकर,
मन्दिर में तुम जलाना ।
(सन्त महर)

भजन

हमें निज धर्म पर चलना,
सिखाती रोज़ रामायण ।
सदा शुभ आचरण करना,
सिखाती रोज़ रामायण ॥
हमें संसार सागर से उतर कर,
पार जाना है ।
हमें सुख से किनारे पर,
लगाती रोज़ रामायण ॥
कहीं छवि विश्नु की बांकी,
कहीं शंकर की है झांकी ।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हृदय आनन्द झूले पर,
झुलाती रोज़ रामायण ॥
कभी वेदों के सागर में,
कभी गीता की गंगा में।
कभी भक्ति सरोवर में,
डुबाती रोज़ रामायण ॥
सरल कविता के कुन्जो में।
बना हिन्दी के मन्दिर में।
पुजारी बिन्दु को प्रभु से,
मिलाती रोज़ रामायण ॥

भजन

भण्डार सकल कल्याणों का,
हे राम तुम्हारे नामों में।
जीवन धन सन्त सुजानों का,
हे राम तुम्हारे नामों में ॥
नहिं कर्म न ज्ञान नहीं भक्ति,
विषयों में जिनकी अनुरक्ति।
उनको भी तारने की शक्ति,
हे राम तुम्हारे नामों में ॥

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विश्राम नहीं एको पल है मनमें,
षट् रिपुओं का बल है।
उनको भी जीतने का बल है,
हे राम तुम्हारे नामों में॥
मिल गई नाम रस की घूटी,
मद, कोह, मोह, तृष्णा छूटी।
भव रोग नाश की है बूटी,
हे राम तुम्हारे नामों में।
कलि में सब साधन विघ्न भरे,
भव सागर कोई कैसे तरे।
तर जाय अगर विश्वास करे,
हे राम तुम्हारे नामों में॥
अब सुखानन्द कर जोड़ कहे,
यह दीन यही वरदान चहै।
बढ़ता ही निरन्तर प्रेम रहे,
हे राम तुम्हारे नामों में॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

[जैनेन्द्र प्रेस ललितपुर में मुद्रित]

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K